7 jktufrd lgHkkfxrk ,o lpuk lEi"k.k

आधुनिक समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के सन्दर्भ में राजनीतिक जागरूकता, सहभागिता और गतिशीलता का विश्लेषण है। अधिकांश विचारक (लर्नर : 1958, विनहम : 1970, आलमण्ड और पावेल : 1966) यह मानते हैं कि नगरीकरण की प्रक्रिया के विस्तार ने राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि की है। डैनियल लर्नर ने नगरीकरण की प्रक्रिया को आधुनिक राष्ट्र के निर्माण के मार्ग में एक महत्वपूर्ण पग माना है। नगरीकरण सभ्यता शिक्षा और सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों को प्रोत्साहन देती है जिनके द्वारा सहभागी संस्थाओं जैसे मतदान आदि का विकास होता है जो कि आधुनिक समाज के निर्माण के प्रमुख आधार हैं। (लर्नर : 1958–60)

नगरीय समुदाय एक सहभागी समुदाय होता है और राजनीतिकरण की प्रक्रिया की वृद्धि के साथ–साथ ग्रामीण समुदाय में भी राजनैतिक सहभागिता के गुण विकसित होते जाते हैं। परम्परागत भारतीय ग्रामीण समुदाय में शक्ति संरचना का जो स्वरूप प्रचलित रहा है उसका प्रमुख आधार जाति व्यवस्था, नातेदारी व्यवस्था, विवाह सम्बन्ध और संकीर्ण निष्ठाएं रही हैं। ग्रामीण समुदाय में पंचायतों का अस्तित्व रहा है जो ग्रामीण समुदाय के व्यक्तियों के व्यवहारों को नियन्त्रित और पारस्परिक विवादों के हल का प्रमुख साधन रही हैं। गांव की प्रमुख जातियों की अपनी अलग जाति पंचायत रही है। जो जाति विशेष के हितों का संवर्द्धन करती रही हैं। परम्परागत ग्रामीण नेतृत्व, जातिगत श्रेष्ठता, वंशानुगत आयु और अनुभव की अधिकता पर आधारित रहा है। (मेहता : 1972, मिश्रा : 1977, शरण : 1978)। परम्परागत ग्रामीण समुदाय पूर्णरूपेण आत्मकेन्द्रित और स्थिर समुदाय रहा है जिसमें राजनीतिक गतिशीलता की मात्रा अत्यन्त सीमित रही है।

परन्तु आधुनिक काल में ग्रामीण समुदाय को जिन परिवर्तन की नवीन शक्तियों ने प्रभावित किया है, उनमें से एक प्रमुख शक्ति नवीन राजनैतिक संस्थाएं और मूल्य है। ग्रामीण समुदाय में बढ़ती हुई शिक्षा कुटीर उद्योगों की स्थापना बढ़ते हुए नगरीय सम्पर्क इत्यादि के सन्दर्भ में इन नवीन राजनैतिक संस्थाओं और मूल्यों ने ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की राजनैतिक जागरूकता और सहभागिता को प्रभावित किया है तथा ग्रामीण समुदाय में नवीन राजनैतिक संस्थाओं का उदय हो रहा है बल्कि ग्रामीण व्यक्ति राजनैतिक दृष्टि से अधिकाधिक जागरूक और सहभागी होते जा रहे हैं (आन्द्रवेते : 1963, वेली : 1963, वीनर : 1963)।

ग्रामीण समुदाय के व्यक्तियों में राजनैतिक सहभागिता व जागरूकता के फलस्वरूप सूचना सम्प्रेषण की ओर तीव्रगति से उन्मुखता प्रदर्शित होती है। आधुनिक गतिशीलता ग्रामीण समुदाय की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। ग्रामीण समुदायों में राजनैतिक सहभागिता व जागरूकता इत्यादि के लिए सूचना सम्प्रेषण साधनों का प्रसार आवश्यक है। समाचार पत्र,

रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों ने वैचारिकी जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है।

संचार व्यवस्था से व्यक्ति को नवीन तथ्यों का ज्ञान और प्रविधियों का बोध होता है। सूचना के नवीन साधन व्यक्ति को राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय घटनाओं से जोड़ते हैं। सूचनाओं से व्यक्ति की दूरदर्शिता और सामाजिक राजनीतिक जीवन के प्रति जागरूकता तथा सहभागिता में वृद्धि होती है। विकासशील समाजों में यह सामाजिक चेतना तथा ग्रामीण समुदायों के सदस्यों की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है। सूचना के नवीन साधन राष्ट्रीय लक्ष्यों, विभिन्न विचारधाराओं, आवश्यताओं तथा व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति सचेत करते हैं। यही नही आधुनिकीकरण सम्बन्धी मूल्यों जैसे उपलब्ध पूर्वाभिमुखता, उच्च महात्वाकांक्षाएं, सामाजिक एवं आर्थिक उर्ध्व गतिशीलता तथा जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त करने में भी संचार साधनों का अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक समाज वैज्ञानिक सैद्धान्तीकरण में सूचना संचार सम्प्रेषण के अत्याधिक सुगठित सिद्धान्तों का विकास हुआ है (ड्यूश : 1953 और 1963, रेश : 1963)। इस सैद्धान्तीकरण की यह मान्यता है कि सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का अध्ययन संचार संरचना के आधार पर किया जा सकता है क्योंकि मनुष्य और मनुष्य का सम्बन्ध उसके पारस्परिक सम्प्रेषण की क्षमता पर निर्भर करता है। (1) संचार साधन के द्वारा जिस प्रकार की सामग्री का प्रवाह होता है उसी के अनुरूप समाज की मूल्य व्यवस्था निर्धारित होती है। (2) संचार के साधन यह निर्धारित करते हैं कि सूचनाएं कहां सम्प्रेषित की जा रही हैं और उनमें से कौन प्रभावित हो रहा है यह स्थिति सामूहिक सामंजस्य को भी प्रतिबिम्बित करती हैं। (3) संचार सुविधाओं का स्वामित्व नियन्त्रण और प्रयोग का लक्ष्य किसी व्यवस्था के राजनैतिक दर्शन को सूचित करता है (स्क्रेम : 1964 : 34)।

राजनैतिक जीवन के सन्दर्भ में सूचना सम्प्रेषण के साधनों का अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा व्यक्ति राजनैतिक घटनाओं और समस्याओं से अवगत मात्र ही नही होता बल्कि नवीन राजनैतिक मूल्यों और विचारधाराओं से उसका व्यवहार तथा जीवन दृष्टिकोण प्रभावित भी होता है। साथ ही साथ संचार साधन व्यक्ति की राजनैतिक सक्रियता और सहभागिता में भी वृद्धि करते हैं (परमात्माशरण : 1978, 29 वस्मरी और वर्मा : 1973, 111, गोयल : 1975, 108–111)। ग्रामीण क्षेत्रों के राजनीतिकरण में तथा ग्राम निवासियों में जनतन्त्रीकरण और राजनीतिक सहभागिता के उद्‌बोधन में संचार साधनों का अत्याधिक महत्व है। ये जन समुदाय की जागरूकता चेतना तथा सामान्य शिक्षा के प्रमुख आधार हैं। इतना ही नही समाज के पिछड़े एवं निम्न वर्ग के लोगों को जो अभिजात संस्कृति से वंचित थे, सूचना सम्प्रेषण साधनों के द्वारा शिक्षित हो रहे हैं। आधुनिक भारत में सूचना सम्प्रेषण साधनों को राजनैतिक विचारों, व्यवहारों तथा सहभागिता का महत्वपूर्ण कारक माना गया है (भम्भरी : 1973 : 126–27, रावर्ट्स : 1974, 37–43, गोयल : 1974 : 118)।

सूचना सम्प्रेषण राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय विचारधाराओं, उद्देश्यों, आवश्यकताओं, हितों तथा गतिविधियों के प्रति चेतनशील बनाता है। यही कारण है कि बहुत से विचारक इसे राजनीतिक समाजीकरण का एक प्रमुख आधार मानते हैं (रास और एल्थाफ : 1971 : 14)।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कई विद्वानों ने ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की राजनैतिक सहभागिता एवं सूचना सम्प्रेषण से सम्बन्धित पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की राजनैतिक सहभागिता एवं सूचना सम्प्रेषण से सम्बन्धित प्राप्त तथ्यों के आधार पर अध्ययन किया गया है। उत्तरदाताओं की राजनैतिक सहभागिता और नवीन राजनैतिक अभिवृत्ति जो नगरीकरण के महत्वपूर्ण सूचक हैं वे किस प्रकार ग्रामीण सामुदायिक जीवन को प्रभावित कर रहे हैं दूसरे शब्दों में नगरीकरण की व्यापक प्रक्रिया के एक अंग के रूप में सूचना सम्प्रेषण के नवीन तथा बृहद साधनों जैसे समाचार–पत्र, रेडियो (ट्रान्जिस्टर), सिनेमा, इलेक्ट्रानिक मीडिया, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि ग्रामीण जीवनशैली, शक्ति संरचना और राजनैतिक सहभागिता के परिवर्तन में इनकी क्या भूमिका हैं। वर्तमान खण्ड अध्ययन को दो खण्डों में विभक्त किया है। (क) राजनैतिक सहभागिता के प्रतिमान (ख) सूचना सम्प्रेषण का प्रभाव।

[k.M & v

jktuSfrd lgHkkfxrk ds izfreku

वर्तमान अध्ययन के प्रस्तुत भाग में ग्रामीण समुदाय के विभिन्न लोगों की राजनैतिक विचारधारा राजनैतिक दलों को मत देना, चुनाव में सहभागिता, जन प्रतिनिधियों से मिलना जुलना, जन प्रतिनिधियों से सहायता, राजनैतिक दलों की रैली में सहभागिता राजनैतिक दलों के बारे में जानना, राजनैतिक व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण मतदान में भाग लेना इत्यादि से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

7-1 % jktuSfrd fopkj/kkjk esa vkLFkk

भारतीय ग्रामीण समाज राजनैतिक दृष्टि से अनेक छोटे–छोटे विचार समूहों में बंटा हुआ है। ये विचार समूह व्यक्ति के राजनैतिक दृष्टिकोण और व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करते हैं तथा समूह विशेष की राजनैतिक व्यवस्था को एक निश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं। राजनैतिक विचारधाराओं का भारत जैसे बहुलवादी समाज में महत्वपूर्ण योगदान यह है कि यह धर्म, जाति और आर्थिक सीमाओं को पार करके व्यक्ति को एक सूत्र में बांधने का कार्य करते हैं। इसके द्वारा दूर–दूर क्षेत्रों तक फैले हुए व्यक्ति एक सूत्र में बंध जाते हैं। साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को नगरीय राजनैतिक शक्ति केन्द्रों के निकट लाने में भी राजनैतिक विचारधारा का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्तिगत स्तर पर किसी राजनैतिक विचारधारा

में आस्था न केवल व्यक्ति की राजनैतिक जागरूकता का परिचायक है बल्कि इसके द्वारा उसके राजनैतिक व्यवहार की दिशा का बोध होता है। प्राप्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि क्या वे राजनैतिक विचारधारा में आस्था रखते हैं ?

प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 65.2 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्रात्मक विचारधारा में आस्था रखते हैं, 23.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक नौकरशाही तन्त्रात्मक विचारधारा में आस्था रखते हैं, 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता सैनिकतन्त्र में आस्था रखते हैं केवल 2.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने राजनैतिक विचारधारा में आस्था के प्रति कोई मत व्यक्त नही किया है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 7.1 में किया गया है।

lkfj.kh %& 7-1 & mRrjnkrkvk dh jktufrd fopkj/kkjk d ifr vkLFkkA

vkLFkk	*vko`fRr*	*ifr'kr*
लोकतन्त्र	150	65.2
प्रशासनिक नौकरशाही तन्त्र	55	23.9
सैनिक तन्त्र	20	8.7
कह नही सकते	5	2.2
योग	230	100.00

7-1-1 % lkekftd ifjoR;] ,o mRrjnkrkvk dh jktufrd fopkj/kkjk e vkLFkk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की राजनैतिक विचारधारा में आस्था पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.1.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सह–सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि जिन उत्तरदाताओं की आस्था लोकतन्त्र में है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 71.6 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 55.8 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 60.0 प्रतिशत पायी गयी है। जो उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्रात्मक व्यवस्था को प्राथमिकता देते हैं। उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 17.9 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में 23.1 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 38.2 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने सैनिक तन्त्र को वरीयता प्रदान की है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 8.9 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 17.3 प्रतिशत पायी गई है। जिन उत्तरदाताओं ने राजनैतिक विचारधारा के प्रति आस्था के बारे में कोई मत व्यक्त नही किया है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 1.6 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में, 3.8 प्रतिशत, वृद्ध आयु

समूह में 1.8 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक युवा आयु समूह के उत्तरदाता लोकतन्त्रात्मक विचारधारा के पोषक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 46.4 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्र में, 26.8 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्र में, 19.5 प्रतिशत उत्तरदाता सैनिकतन्त्र में आस्था रखते हैं। केवल 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता कह नही सकते, मत व्यक्त किए हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 58.2 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्र में 28.2 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्र में 11.7 प्रतिशत उत्तरदाता सैनिक तन्त्र में आस्था रखते है केवल 1.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किए हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 74.6 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्र में, 25.4 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्र में आस्था रखते हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था में आस्था रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि अशिक्षित लोगों को छोड़कर प्रत्येक शैक्षणिक स्तर के अधिकांश उत्तरदाता लोकतन्त्र के प्रति आस्थावान हैं। सैनिक तन्त्र के प्रति अशिक्षित वर्ग के ज्यादातर उत्तरदाताओं में निष्ठा पायी गयी तथा प्रशासनिक तन्त्र के प्रति प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के ज्यादातर उत्तरदाताओं में आस्था प्रतीत होती है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 80.9 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्र, 12.0 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्र में, 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता सैनिक तन्त्र में आस्था रखते हैं। पिछड़ीजाति में 68.3 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्र में, 19.5 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्र में, 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता सैनिक तन्त्र में आस्था रखते हैं। केवल 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक विचारधारा में आस्था के प्रति कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अनुसूचितजाति में 56.6 प्रतिशत उत्तरदाता लोकतन्त्र में, 32.2 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशासनिक तन्त्र में, 8.5 प्रतिशत उत्तरदाता सैनिक तन्त्र में आस्था रखते हैं। केवल 2.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने राजनैतिक विचारधारा में आस्था के प्रति कोई मत व्यक्त नही किया है। अतः यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि लोकतन्त्रात्मक विचारधारा का अनुमोदन यद्यपि तीनों ही जाति समूह के अधिकांश उत्तरदाताओं ने किया है तथापि अनुमोदन की यह मात्रा उच्चजाति की तुलना में पिछड़ीजाति तथा अनुसूचितजाति में कम पायी गई है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.4 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-1-1 & lkekftd ifjoR;l ,oa mRrjnkrkvksa dh jktuSfrd fopkj/kkjk esa vkLFkkA

lkekftd ifjoR;l	ykdrU=	iz'kklfud rU=	lSfud rU=	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q					
20—35	88 71.6	22 17.9	11 8.9	2 1.6	123 100.0
36—50	29 55.8	12 23.1	9 17.3	2 3.8	52 100.0
51 से ऊपर	33 60.0	21 38.2	—	1 1.8	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	19 46.4	11 26.8	8 19.5	3 7.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	60 58.2	29 28.2	12 11.7	2 1.9	103 100.0
हाईस्कूल / इन्टरमीडिएट	44 74.6	15 25.4	—	—	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	27 100.0	—	—	—	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	34 80.9	5 12.0	3 7.1	—	42 100.0
पिछड़ीजाति	56 68.3	16 19.5	8 9.8	2 2.4	82 100.0
अनुसूचितजाति	60 56.6	34 32.1	9 8.5	3 2.8	106 100.00
योग	150 65.2	55 23.9	20 8.7	5 2.2	230 100.0

7-2 % jktuSfrd nyksa dh lnL;rk ;k lgkuqHkwfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित ग्राम सभाएं (गदनपुर, कसमण्डी, महीनकुण्ड, करीमनगर) हरदोई सदर संसदीय क्षेत्र तथा साण्डी विधानसभा क्षेत्र में स्थित है। इन क्षेत्र में जिन राजनैतिक दलों का प्रभुत्व रहा है उनमें से समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस का प्रमुख स्थान रहा है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की राजनैतिक सहभागिता का अध्ययन करते हुए उनसे पूंछा गया कि वे किस राजनैतिक दल के

सदस्य हैं या किस दल में सहानुभूति रखते हैं ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 40.4 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। 34.4 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। 21.7 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाज पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। केवल 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के सदस्य है या सहानुभूति रखते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-2 & jktuhfrd nyksa dh lnL;rk ;k lgkuqHkwfrA

jktuhfrd ny	*vko`fRr*	*izfr'kr*
समाजवादी पार्टी	93	40.4
भारतीय जनता पार्टी	79	34.4
बहुजन समाज पार्टी	50	21.7
कांग्रेस	8	3.5
योग	230	100.0

7-2-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa jktuhfrd nyksa dh lnL;rk ;k lgkuqHkwfr

वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाताओं में राजनैतिक दलों की सदस्यता या सहानुभूति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को आगे विश्लेषित कर सारिणी 7.2.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 43.9 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी में, 32.5 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी में, 20.3 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाज पार्टी में तथा केवल 3.3 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। मध्यम आयु समूह के 34.6 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के, 38.5 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के, 23.1 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाज पार्टी के तथा केवल 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। वृद्ध आयु समूह के 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के, 34.6 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के, 23.6 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाज पार्टी के तथा केवल 3.6 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का और वृद्ध आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का झुकाव समाजवादी पार्टी की ओर प्रदर्शित होता है। जबकि भारतीय जनता पार्टी के समर्थक मध्यम आयु वर्ग के अधिकांश उत्तरदाता हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.2.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 29.3 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के, 26.8 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजपार्टी के एवं 19.5 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 37.9 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के, 32.0 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के, 30.1 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजपार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 47.5 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के, 38.9 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के, 13.6 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजपार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 51.9 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के, 44.4 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के, केवल 3.7 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजपार्टी के सदस्य हैं या सहानुभूति रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि अशिक्षित और निम्न शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की राजनैतिक प्रतिबद्धता अत्याधिक विभेदीकृत है। उनमें समाजवादी पार्टी का विशेष समर्थन है। इसके अतिरिक्त स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं का भारतीय जनता पार्टी की ओर भी झुकाव दर्शित होता है। लेकिन उत्तरदाताओं में बढ़ते हुए शैक्षिक स्तर के क्रम में विशेषतः समाजवादी पार्टी के समर्थक सदस्य ज्यादा हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारणी 8.7 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के अधिकांश उत्तरदाता 61.9 प्रतिशत समाजवादी पार्टी के समर्थक हैं, 26.2 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के समर्थक हैं, 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजपार्टी के समर्थक हैं। केवल 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के समर्थक हैं। पिछड़ीजाति के 47.6 प्रतिशत समाजवादी पार्टी के समर्थक हैं, 42.7 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के समर्थक हैं, 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता कांग्रेस पार्टी के समर्थक हैं, 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजपार्टी के समर्थक हैं या सहानुभूति रखते हैं। अनुसूचितजाति के 26.4 प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के समर्थक सदस्य है, 31.1 प्रतिशत उत्तरदाता भारतीय जनता पार्टी के समर्थक सदस्य हैं तथा 42.5 प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाज पार्टी के सदस्य है या समर्थक हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि उच्चजाति व पिछड़ीजाति के अधिकांश उत्तरदाता समाजवादी पार्टी के समर्थक हैं तथा अनुसूचितजाति के अधिकांश उत्तरदाता बहुजन समाज पार्टी के समर्थक सदस्य हैं तथा यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति तथा उच्चजाति का झुकाव भारतीय जनता पार्टी की ओर है जो वर्तमान केन्द्र सरकार (कांग्रेस सरकार) की ज्याद्तियों से

जनता आक्रोश में थी जिसकी अभिव्यक्ति मतदाताओं ने मताधिकार के माध्यम से की। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.2.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-2-1 % lkekftd ifjoR;l ,o jktuifrd nyk dh lnL;rk ;k lgkuHkfr

lkekftd ifjoR;l	lektoknh ikVh	Hkkjrh; turk ikVh	cgqtu lekt ikVh	dkaxzl	;kx
vk;q					
20–35	54 43.9	40 32.5	25 20.3	4 3.3	123 100.0
36–50	18 34.6	20 38.5	12 23.1	2 3.8	52 100.0
51– ऊपर	21 38.2	19 34.6	13 23.6	2 3.6	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	12 29.3	11 26.8	10 24.4	8 19.5	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	39 37.9	33 32.0	31 30.1	–	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	28 47.5	23 38.9	8 13.6	–	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	14 51.9	12 44.4	1 3.7	–	27 100.0
Tkkfr					
उच्च शिक्षा	26 61.9	11 26.2	3 7.1	2 4.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	39 47.6	35 42.7	2 2.4	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	28 26.4	33 31.1	45 42.5	–	106 100.0
योग	93 40.4	79 34.4	50 21.7	8 3.5	230 100.0

7-3 % jktuifrd nyk dh jfy;k e lgHkkfxrk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित ग्रामसभाओं के विधान सभा क्षेत्र में तथा मुख्यालय (हरदोई शहर) में समय–समय पर विभिन्न पार्टियों की राजनैतिक रैलियों का संचालन बहुधा

हुआ करता है। इन राजनैतिक रैलियों में जनपद हरदोई की सभी विधानसभाओं के मतदान व अन्य सदस्य व पार्टी सदस्य सहभाग करते हैं। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से राजनैतिक सहभागिता का अध्ययन करते हुए उनसे पूंछा गया कि वे राजनैतिक दलों की रैलियों में सहभाग करते हैं। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 70.0 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं। 25.2 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रैलियों में (जाते हैं) सहभाग करते हैं, केवल 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी रैली में सहभाग नही करते हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाताओं की आयोजित राजनैतिक रैलियों में विशेष सहभागिता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.3 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-3 % jktufrd nyk dh jfy;k e lgHkkfxrkA

jktufrd nyk dh jyh e tkuk	*vkofRr*	*ifr'kr*
प्रत्येक रैली में	161	70.0
कभी – कभी रैलियों में	58	25.2
कभी नही जाते	11	4.8
योग	230	100.0

7-3-1 % lkekftd ifjoR;Z ,o jktufrd nyk dh jfy;k e lgHkkfxrk

वर्तमान अध्ययन के उत्तरदाताओं में राजनैतिक दलों की रैलियों में सहभागिता पर सामाजिक परिवर्त्य का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.3.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 75.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 20.3 प्रतिशत उत्तरदाता रैलियों में कभी–कभी सहभाग करते हैं, 4.1 प्रतिशत उत्तरदाता रैलियों में कभी नही जाते हैं। मध्यम आयु समूह के 73.1 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 19.2 प्रतिशत उत्तरदाता रैलियों में कभी–कभी सहभाग करते हैं, 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक रैलियों में कभी नही जाते हैं। वृद्ध आयु समूह के 54.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 41.8 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक रैलियों में कभी–कभी सहभाग करते हैं, केवल 3.6 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक रैलियों में कभी भी नही जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह व मध्यम आयु समूह के अधिकांश उत्तरदाता अपेक्षाकृत वृद्ध आयु समूह के राजनैतिक दलों की रैलियों में अत्याधिक सहभाग करते हैं जो कि सामाजिक परिवर्तन का द्योतक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 70.7 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी कभी सहभाग करते हैं केवल 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी नही (जाते हैं) सहभाग करते हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 77.7 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 19.4 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी सहभाग करते हैं, केवल 2.9 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी नही (जाते हैं।) सहभाग करते हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 72.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 23.7 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी–कभी सहभाग करते हैं, केवल 3.4 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी नही (जाते हैं) सहभाग करते हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 33.3 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 51.9 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी–कभी सहभाग करते हैं, 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी नही जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि प्राइमरी/जूनियर व हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के क्रमशः अधिकांश उत्तरदाता राजनैतिक दलों की प्रत्येक रैली में सहभागी होते हैं। जबकि स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी–कभी सहभागी होते हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति वर्ग के 66.7 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 19.0 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी–कभी सहभाग करते हैं, 14.3 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैली में कभी नही (जाते है) सहभाग करते हैं। पिछड़ीजाति वर्ग के 68.3 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 28.0 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी–कभी सहभाग करते हैं, केवल 3.7 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी नही (जाते हैं) सहभाग करते हैं। अनुसूचितजाति वर्ग के 72.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं, 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी–कभी सहभाग करते हैं, केवल 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी नही (जाते हैं) सहभाग करते हैं। अतः स्पष्ट है कि अनुसूचितजाति वर्ग के तथा पिछड़ीजाति वर्ग के क्रमशः उत्तरदाता ज्यादातर प्रत्येक राजनैतिक दलों की रैली में सहभाग करते हैं तथा उच्चजाति के उत्तरदाता भी प्रत्येक रैली में सहभाग करते हैं तथा कुछ प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की रैलियों में कभी नही जाते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.3.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-3-1 % lkekftd ifjoR;l ,o jktufrd nyk dh jfy;k e lgHkkfxrk

lkekftd ifjoR;l	iR;kd jyh e	dHkh&dHkh jyh e	dHkh ugh tkr	;kx
vk;				
20—35	93 75.6	25 20.3	5 4.1	123 100.0
36—50	38 73.1	10 19.2	4 7.7	52 100.0
50 से ऊपर	30 54.6	23 41.8	2 3.6	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	29 70.7	10 24.4	2 4.9	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	80 77.7	20 19.4	3 2.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	43 72.9	14 23.7	2 3.4	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	9 33.3	14 51.9	4 14.8	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	28 66.7	8 19.0	6 14.3	42 100.0
पिछड़ीजाति	56 68.3	23 28.0	3 3.7	82 100.0
अनुसूचितजाति	77 72.6	27 25.5	2 1.9	106 100.0
योग	161 70.0	58 25.2	11 4.8	230 100.0

7-4 % pquko e lgHkkfxrk

राजनैतिक सहभागिता और जागरूकता का एक प्रमुख मापदण्ड चुनाव में भाग लेना है। मतदान व्यक्ति की राजनैतिक प्रतिबद्धता का परिचायक है। भारतीय समाज में मतदान

प्रक्रिया सम्पूर्ण राष्ट्र और प्रत्येक राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र को एक राजनैतिक सूत्र में बांधती है। वर्तमान भारतीय चुनाव प्रणाली में केन्द्र और राज्य की विधान निर्माणी संस्थाओं के लिए पृथक–पृथक चुनाव की व्यवस्था है। यह चुनाव प्रति पांच वर्ष पर सम्पन्न किया जाता है और वयस्क मताधिकार प्रणाली के आधार पर मतदान करके अपने लोकसभा और विधानसभा के प्रतिनिधियों का चयन करते हैं। जिस समय वर्तमान अध्ययन के तथ्यों का संकलन किया गया उस समय 2012 का विधानसभा चुनाव सम्पन्न हो गया था। जिसमें जनता द्वारा महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया था। जिसमें बहुजन समाजपार्टी के स्थान पर समाजवादी पार्टी पूर्व सत्ता में उभरकर सामने आयी थी तथा समाजवादी पार्टी की (एकल सत्ताधारी) सरकार का गठन हुआ था।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि क्या उन्होने चुनाव में भाग लिया है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 65.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चुनाव में भाग लिया व मतदान किया, 29.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने चुनाव में भाग नही लिया, केवल 5.2 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के प्रति कोई मत व्यक्त नही किए। अतः स्पष्ट है कि पिछले चुनाव की अपेक्षा वर्तमान विधानसभा के चुनाव में मतदान का प्रतिशत कई गुना बढ़ा है तथा तथ्यों से यह स्पष्ट है कि मतदाताओं के मस्तिष्क में परिवर्तन के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती दिखाई दे रही है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.4 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-4 % pquko esa lgHkkfxrk

pquko esa lgHkkfxrk	*vko`fRr*	*izfr'kr*
चुनाव में भाग लेना (मतदान करना)	150	65.2
चुनाव में भाग नही लिये हैं।	68	29.6
कह नही सकते	12	5.2
योग	230	100.0

7-4-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa pquko esa lgHkkfxrk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की चुनाव में सहभागिता का सामाजिक परिवर्त्यों पर प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को आगे विश्लेषित कर सारिणी 7.4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 71.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 4.1 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में

सहभागिता के प्रति कोई मत व्यक्त नही किए हैं। मध्यम आयु समूह के 61.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए है, 32.7 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 5.8 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के प्रति कोई मत व्यक्त नही किए हैं। वृद्ध आयु समूह के 54.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए है, 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं, केवल 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के सन्दर्भ में कुछ भी नही कहे हैं। अतः स्पष्ट है कि चुनाव में सहभागिता की मात्रा वृद्ध आयु समूह में युवा आयु समूह की तुलना में कम पायी गयी है तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं की चुनाव में मतदान के प्रति जागरूक प्रतीत होती है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 58.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 36.6 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के सन्दर्भ में मत व्यक्त नही कर सके हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 64.1 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 33.0 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 2.9 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 69.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए है, 23.7 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 6.8 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के प्रति मत व्यक्त नही किए हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 70.4 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 18.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 11.1 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के प्रति मत व्यक्त करने से मना कर दिया है। अतः स्पष्ट है कि अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं की तुलना में क्रमशः उच्च शिक्षित उत्तरदाताओं ने अधिकांशतः चुनाव में भाग लिया है।

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 59.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 33.3 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 7.2 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। पिछड़ीजाति के 63.4 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 34.2 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं, 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अनुसूचितजाति के 68.9 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग लिए हैं, 24.5 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में भाग नही लिए हैं केवल 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता चुनाव में सहभागिता के प्रति कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति की तुलना में अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति समूह में चुनाव में सहभागिता व मतदान के प्रति जागरूकता प्रतीत होती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-4-1 % lkekftd ifjoR;l ,o puko e lgHkkfxrk

lkekftd ifjoR;l	puko e Hkkx yuk	puko e Hkkx u yuk	dg ugh ldr	;kx
vk;|				
20–35	88 71.5	30 24.4	5 4.1	123 100.0
36–50	32 61.5	17 32.7	3 5.8	52 100.0
51 से ऊपर	30 54.5	21 38.2	4 7.3	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	24 58.5	15 36.6	2 4.9	41 100.0
प्राइमरी/ जूनियर	66 64.1	34 33.0	3 2.9	103 100.0
हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट	41 69.5	14 23.7	4 6.8	59 100.0
स्नातक/ स्नातकोत्तर	19 70.4	5 18.5	3 11.1	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	25 59.5	14 33.3	3 7.2	42 100.0
पिछड़ीजाति	52 63.4	28 34.2	2 2.4	82 100.0
अनुसूचितजाति	73 68.9	26 24.5	7 6.6	106 100.0
योग	150 65.2	68 29.6	12 5.2	230 100.0

7-5 % tuifrfuf/k cuu ;k lUrku dk cukus d ifr ftKklk

वर्तमान भारतीय राजनैतिक जीवन के बदलते प्रतिमानों के फलस्वरूप नवीन राजनैतिक स्वरूप ने ग्रामीण व नगरीय व्यक्तियों की मनोवृत्तियों को अत्याधिक प्रभावित किया है। परिणामतः हर व्यक्ति में जनप्रतिनिधित्व करने की जिज्ञासा उत्पन्न हो रही है। राजनैतिक संलग्नता ग्रामीण समुदायों में अत्याधिक दृष्टिगत होती है क्योंकि क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों को

तथा राज्य स्तरीय जनप्रतिनिधियों को जीरो से हीरो बनते देख आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तहत हर व्यक्ति अपने जीवन स्तर को नया आयाम देने के लिए जनप्रतिनिधि बनकर के अपने निम्न जीवन स्तर को उच्चता प्रदान करने हेतु प्रयास में रहता है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप जनप्रतिनिधि बनने या अपनी सन्तान को बनाने के प्रति आपकी क्या जिज्ञासा है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 65.7 प्रतिशत उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को जनप्रतिनिधि बनाने के प्रति जिज्ञासा रखते है तथा 26.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को जनप्रतिनिधि बनाने के प्रति जिज्ञासावान नही है। केवल 7.4 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को जनप्रतिनिधि बनाने की जिज्ञासा रखते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.5 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 7-5 % tuizfrfuf/k cuus ;k lUrku dks cukus ds izfr ftKklkA

tuizfrfuf/k cuus ;k cukus dh ftKklk	*vko`fRr*	*izfr'kr*
सहमत	151	65.7
असहमत	62	26.9
कह नही सकते	17	7.4
योग	230	100.0

7-5-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa tuizfrfuf/k cuus ;k lUrku dks cukus ds izfr ftKklk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.5.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से युवा आयु के 70.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है, 20.4 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं तथा 8.9 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। मध्यम आयु समूह के जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 65.4 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं, 30.8 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं तथा 3.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई भी मत व्यक्त नही किए हैं। वृद्ध आयु समूह के जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 54.5 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है, 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं एवं केवल 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। अतः स्पष्ट है कि दो तिहाई से ज्यादा युवा आयु समूह के उत्तरदाता

जनप्रतिनिधि बनने की जिज्ञासा रखते हैं तथा मध्यम व वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता भी जनप्रतिनिधि बनने की तथा सन्तान को जनप्रतिनिधि बनाने की जिज्ञासा रखते हैं तथा यह कहा जा सकता है कि युवा, माध्यम व वृद्ध आयु समूह के अधिकांश उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासावान हैं।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 39.1 प्रतिशत सहमत हैं, 48.8 प्रतिशत असहमत हैं केवल 12.1 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई भी मत व्यक्त नही कर सके हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 67.9 प्रतिशत सहमत हैं, 24.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं और केवल 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई भी मत व्यक्त नही कर सके हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 72.9 प्रतिशत सहमत है, 20.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है तथा केवल 6.8 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कुछ भी नही बताये हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 81.5 प्रतिशत सहमत है तथा 18.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं। अतः स्पष्ट है कि क्रमशः उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकांशतः उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासावान हैं। अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधित्व करने में अपने को असमर्थ समझते हैं जिसके कारण कथन के सम्बन्ध में कम जिज्ञासावान हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 66.7 प्रतिशत सहमत हैं, 28.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं केवल 4.7 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। पिछड़ीजाति वर्ग के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 62.2 प्रतिशत सहमत हैं, 28.0 प्रतिशत असहमत हैं केवल 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अनुसूचितजाति के उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासा से 67.9 प्रतिशत सहमत है, 25.5 प्रतिशत असहमत हैं केवल 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतः स्पष्ट है कि अनुसूचितजाति व उच्चजाति के उत्तरदाता अधिकांशतः जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति जिज्ञासावान हैं जोकि उच्च जीवन स्तर पाने की अभिलाषा का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.5.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-5-1 % lkekftd ifjoR;l ,o tuifrfuf/k cuus ;k lUrku dk cukus ds ifr ftKklk

lkekftd ifjoR;l	lger	vlger	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	87 70.7	25 20.4	11 8.9	123 100.0
36–35	34 65.4	16 30.8	2 3.8	52 100.0
51 से ऊपर	30 54.5	21 38.2	4 7.3	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	16 39.1	20 48.8	5 12.1	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	70 67.9	25 24.3	8 7.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	43 72.9	12 20.3	4 6.8	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	22 81.5	5 18.5	–	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	28 66.7	12 28.6	2 4.7	42 100.0
पिछड़ीजाति	51 62.2	23 28.0	8 9.8	82 100.0
अनुसूचितजाति	72 67.9	27 25.5	7 6.6	106 100.0
योग	151 65.7	62 26.9	17 7.4	230 100.0

7-6 % orZeku jkT; ljdkj ds fodkl dk;ksZ o uhfr;ksa ds ifr nf"Vdks.k

वर्तमान भारतीय राजनैतिक जीवन में राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों दलों का उदय हुआ है। इन सभी दलों की अलग–अलग राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर विकास कार्यों व नवीन आधुनिक नीतियों को लागू करने की योजनाएं होती हैं। जिसके तहत चुनाव के समय हर दल चुनाव प्रचार में अपनी विकास कार्यों की योजनाओं व नवीन नीतियों को घोषित करता है तथा इन योजनाओं व नीतियों को लागू करने के लिए जनता से अपने पक्ष में मत देने के लिए गुजारिश करता है। जनता को जिस दल की नीतियां व विकासकारी योजनाएं अच्छी लगती हैं

तथा जनता यह सोंचती है कि अमुख राजनैतिक दल की सरकार यदि बनती है तो उसके जीवन में आधुनिक परिवर्तन आ सकता हैं और इसी विचारधारा के तहत अच्छी विकासकारी व कल्याणकारी योजनाओं व नीतियों के बल पर उक्त दल को जनता मत देकर पूर्ण बहुमत से जिताती है जिससे राज्य व केन्द्र में उक्त दल एकल सरकार के लिए प्रस्ताव करता है व सरकार बनाता है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि क्या वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नवीन नीतियों से वह संतुष्ट है ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 65.2 प्रतिशत उत्तरदाता राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से संतुष्ट है, 26.1 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं केवल 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश उत्तरदाता राज्य सरकार की नवीन नीतियों व विकासकारी कार्यों व कल्याणकारी योजनाओं से सन्तुष्ट हैं। उपर्युक्त विश्लेषण को सारिणी 7.6 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 7-6 % orZeku jkT; ljdkj ds fodkl dk;ksZ o uhfr;ksa ds izfr nf"Vdks.k

fodkl dk;ksZ ds izfr nf"Vdks.k	*vkofRr*	*izfr'kr*
संतुष्ट	150	65.2
असन्तुष्ट	60	26.1
कह नही सकते	20	8.7
योग	230	100.0

7-6-1 % lkekftd ifjoR;Z ,o orZeku jkT; ljdkj ds fodkl dk;ksZ o uhfr;ksa ds izfr nf"Vdks.k

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों के प्रति दृष्टिकोण पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.6.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में सम्मिलित युवा आयु समूह के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से 70.7 प्रतिशत संतुष्ट है, 20.3 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं केवल 9.0 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किए हैं। मध्यम आयु समूह के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से 63.5 प्रतिशत संतुष्ट है, 28.8 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं तथा 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई भी मत व्यक्त नही किए हैं। वृद्ध आयु समूह के

उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से 54.5 प्रतिशत संतुष्ट हैं, 36.4 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट है केवल 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाता अपेक्षाकृत मध्यम व वृद्ध आयु समूह के अधिकांशतः वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से संतुष्ट है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों से 68.3 प्रतिशत संतुष्ट है, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं केवल 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों से 67.9 प्रतिशत संतुष्ट है, 23.3 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं केवल 8.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों से 61.0 प्रतिशत संतुष्ट है, 30.5 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं केवल 8.5 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों से 59.3 प्रतिशत संतुष्ट है, 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता असन्तुष्ट हैं केवल 11.1 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही किए हैं। अतः स्पष्ट है कि कम शिक्षित उत्तरदाता व अशिक्षित उत्तरदाता अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित उत्तरदाता की तुलना में वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से संतुष्ट है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति समूह के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से 59.5 प्रतिशत संतुष्ट है, 28.6 प्रतिशत उत्तरदाता असंतुष्ट हैं केवल 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। पिछड़ीजाति समूह के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से 63.4 प्रतिशत संतुष्ट है, 26.8 प्रतिशत उत्तरदाता असंतुष्ट हैं केवल 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। अनुसूचितजाति समूह के उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से 68.9 प्रतिशत संतुष्ट है, 24.5 प्रतिशत उत्तरदाता असंतुष्ट हैं केवल 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। अतः स्पष्ट है कि अनुसूचितजाति समूह के अधिकांश उत्तरदाता वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से संतुष्ट हैं एवं उच्चजाति समूह के उत्तरदाता विकास कार्यों व नीतियों से अपेक्षाकृत कम संतुष्ट प्रतीत होते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.6.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 7-6-1 % lkekftd ifjoR;l ,o orleku jkT; ljdkj d fodkl dk;kl o uhfr;k d ifr nf"Vdk.k

Lkkekftd ifjoR;l	lrq"V	vlUrq"V	dg ugh ldrs	;kx
vk;q				
20—35	87 70.7	25 20.3	11 9.0	123 100.0
36—50	33 63.5	15 28.8	4 7.7	52 100.0
51 से ऊपर	30 54.5	20 36.4	5 9.1	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	28 68.3	10 24.4	3 7.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	70 67.9	24 23.3	9 8.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	36 61.0	18 30.5	5 8.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	16 59.3	8 29.6	3 11.1	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	25 59.5	12 28.6	5 11.9	42 100.0
पिछड़ीजाति	52 63.4	22 26.8	8 9.8	82 100.0
अनुसूचितजाति	73 68.9	26 24.5	7 6.6	106 100.0
योग	150 65.2	60 26.1	20 8.7	230 100.0

[k.M &¼c½

lpuk lEizs"k.k dk izHkko

आधुनिक विकासवादी युग में तथा आधुनिक गतिशील समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता सूचना सम्प्रेषण के वृहद साधनों का प्रसार है। समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इलेक्ट्रानिक मीडिया, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों ने मानव के वैचारिकी जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है। संचार व्यवस्था से व्यक्ति को नवीन तथ्यों का ज्ञान का तथा प्रविधियों का बोध होता है। सूचना के नवीन साधन व्यक्ति को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं से जोड़ती है। सूचनाओं से व्यक्ति की

दूरदर्शिता और सामाजिक राजनैतिक जीवन के प्रति जागरूकता तथा सहभागिता में वृद्धि होती है। सूचना के नवीन साधन राष्ट्रीय लक्ष्यों विभिन्न विचारधाराओं आवश्यकताओं तथा व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति सचेत करते हैं। यही नही आधुनिकीकरण सम्बन्धी मूल्यों जैसे उपलब्ध पूर्वाभिमुखता, उच्च महात्वाकांक्षाएं सामाजिक एवं आर्थिक उर्द्धव गतिशीलता तथा जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त करने में भी संचार साधनों का अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

आधुनिक समाज वैज्ञानिक सैद्धान्तीकरण में सूचना सम्प्रेषण के अत्याधिक सुगठित सिद्धान्तों का विकास हुआ है। संचार साधनों को मानव समाज का जाल कहा गया है (ड्यूश : 1953 और 1963, रेश : 1963)। 'डेनियल लर्नर' ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में संचार साधनों के महत्व का विश्लेषण करते हुए बताया है कि परम्परागत समाजों का आधुनिक समाज की दिशा में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण आधार सूचना सम्प्रेषण के वृहद साधन हैं। 'लर्नर' ने इम्पैथी की अवधारणा का प्रयोग करते हुए यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक व्यक्ति में इम्पैथी का गुण अत्याधिक होता है। इम्पैथी का तात्पर्य अपने को दूसरे व्यक्ति की स्थिति में कल्पना करना है इस प्रकार का व्यक्ति मनोवैज्ञानिक दृष्टि से गतिशील होता है। वह सार्वजनिक हित के विषयों और व्यक्तिगत विचारों में भेद स्थापित कर सकता है। इस प्रकार का व्यक्ति एक सहभागी व्यक्ति होता है। उसके अपने विचार होते हैं वह नगद उपभोक्ता होता है और वह वोट देता है (लर्नर : 1958 : 47–52)।

आधुनिक भारत में ग्रामीण क्षेत्रों का राजनैतिकरण, ग्रामवासियों में जनतन्त्रीकरण और राजनैतिक सहभागिता के उद्‌बोधन में सूचना संचार के साधनों का योगदान महत्वपूर्ण है। ये जनसमुदाय की जागरूकता, चेतना तथा सामान्य शिक्षा के प्रमुख आधार हैं। इतना ही नही, समाज के पिछड़े एवं निम्न वर्ग के लोगों को जो अभिजात संस्कृति से वंचित थे, वे संचार सम्प्रेषण साधनों को आधुनिकता एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक गतिशीलता का सृजन स्त्रोत तथा जातीय एवं परम्परागत प्रक्रियाओं के संगठन में सुदृढ़ता लाने का आधार मानते हैं (एम. एन. श्रीनिवास : 1962:74)। 'योगेन्द्र सिंह' के अनुसार भारतीय सन्दर्भ में सम्प्रेषण के साधनों के आधुनिकीकरण ने परम्परा और आधुनिकता के मध्य सांस्कृतिक विसंगति को जन्म दिया है (सिंह : 1973:13)। आधुनिक भारत में सूचना संचार सम्प्रेषण साधनों को राजनैतिक विचारों, व्यवहारों तथा सहभागिता का महत्वपूर्ण कारक माना गया है (भम्भरी : 1973:126–27, राबर्ट्स : 1974:37–43, गोयल :1974:118)। इन सैद्धान्तीकरण की यह मान्यता है कि सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का अध्ययन संचार संरचना के आधार पर किया जा सकता है। क्योंकि मनुष्य और मनुष्य का सम्बन्ध उसके पारस्परिक सम्प्रेषण की क्षमता पर निर्भर करता है। ''विलवर स्क्रेम'' ने कहा है – (1) संचार साधन के द्वारा जिस प्रकार की सामग्री का प्रवाह होता है उसी के अनुरूप समाज की मूल्य व्यवस्था निर्धारित होती है। (2) संचार संरचना का आकार अर्थात् सन्देश वाहन के वृहद साधन और श्रोतागण समाज के आर्थिक विकास को प्रतिबिम्बित करते हैं।(3) संचार के साधन जो यह निर्धारित करते हैं कि सूचनाएं कहां सम्प्रेषित की जा रही हैं

और उनसे कौन प्रभावित हो रहा है। यह स्थिति सामूहिक सामंजस्य को भी प्रतिबिम्बित करती है (स्क्रेम : 1964 :34)।

राजनैतिक जीवन के सन्दर्भ में सूचना सम्प्रेषण के साधनों का अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा व्यक्ति राजनैतिक घटनाओं और समस्याओं से अवगत मात्र ही नही होता बल्कि नवीन राजनैतिक मूल्यों और विचारधाराओं से उसका व्यवहार तथा जीवन दृष्टिकोण भी प्रभावित होता है। साथ ही साथ संचार साधन व्यक्ति की राजनैतिक सक्रियता और सहभागिता में वृद्धि भी करते हैं। (परमात्माशरण : 1978:29, बस्मरी और वर्मा : 1973:111, गोयल : 1975:108–111)।

वर्तमान अध्ययन में सूचना सम्प्रेषण के वृहद साधनों जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर इन्टरनेट, भ्रमणशीलता इत्यादि का अध्ययन किया गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीण सामुदायिक जीवन को सूचना सम्प्रेषण साधन किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं।

7-7 % Hkk"kkvksa dk Kku

भाषा समाज में एक ओर जहां कथन, संदेश वाहक का कार्य करती है वहीं वह मानवीय विचारों भावनाओं तथा अन्तःक्रियाओं की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण माध्यम की भूमिका निभाती है। भाषा न केवल कला, साहित्य इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत का मूल आधार है बल्कि यह नवीन विचारों और मूल्यों के विस्तार की प्रमुख कुंजी है। सूचना संचार सम्प्रेषण के सन्दर्भ में भाषाओं के ज्ञान का क्रियात्मक योगदान होता है क्योंकि व्यक्ति की विभिन्न भाषाओं के बोलने, पढ़ने एवं लिखने की क्षमता ही उसकी साहित्य कृतियों को समझने, विभिन्न घटनाओं से अवगत होने तथा विचारों को व्यक्त करने का आधार प्रदान करती है। इतना ही नही समाज में भाषाओं का ज्ञान ही व्यक्ति को विभिन्न वैदिक समूहों से सम्बन्धित करता है। भारतीय सन्दर्भ में ऐतिहासिक तथा वैदिक दृष्टिकोण से अंग्रेजी भाषा का ज्ञान तथा उसमें क्षमता व्यक्ति को आधुनिकीकरण की ओर संस्कृत भाषा का ज्ञान तथा उसमें दक्षता उसकी भारतीय पुरातन वैदिक विचारधारा की ओर संकेत करती है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि वे कौन–कौन सी भाषाएं पढ़ तथा बोल सकते हैं। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित चारों ग्रामसभाओं के सभी लोग हिन्दी भाषा बोल लेते हैं। 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता अंग्रेजी भाषा बोल लेते हैं, 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता संस्कृत भाषा बोल लेते हैं, 5.2 प्रतिशत उत्तरदाता उर्दू भाषा बोल सकते हैं तथा 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य भाषा भी बोल सकते हैं। विशेषतः ग्रामसभाओं के सभी व्यक्ति हिन्दी भाषा बोलते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.7 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-7 % mRrjnkrkvksa }kjk Hkk"kkvksa dk ckyukA

Hkk"kk ckyuk	vkofRr	ifr'kr
हिन्दी	230	100.0
अंग्रेजी	75	32.6
संस्कृत	15	6.5
उर्दू	12	5.2
अन्य	8	3.5

7-8 % Hkk"kk,a fy[kuk

ग्रामीण समुदाय में भाषाओं के लिखने की प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए यह कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में से 82.2 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दी भाषा, 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता अंग्रेजी भाषा, 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता सस्कृत भाषा, 5.2 प्रतिशत उर्दू भाषा लिख सकते हैं केवल 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य भाषाओं को लिखना जानते हैं। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा को लिखने वाले अधिक उत्तरदाता हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.8 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-8 mRrjnkrkvksa }kjk Hkk"kkvksa dk fy[kuk

Hkk"kk fy[kuk	vkofRr	ifr'kr
हिन्दी	189	82.2
अंग्रेजी	75	32.6
संस्कृत	15	6.5
उर्दू	12	5.2
अन्य	8	3.5

7-9 % Hkk"kkvksa dk i<+uk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप कौन–कौन सी भाषाएं पढ़ सकते हैं प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 82.2 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दी, 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता अंग्रेजी भाषा को, 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता संस्कृत भाषा को, 5.2 प्रतिशत उत्तरदाता उर्दू भाषा को पढ़ सकते हैं केवल 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य भाषाओं को भी पढ़ सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि ज्यादातर उत्तरदाता हिन्दी भाषा का प्रयोग पढ़ने के लिए करते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.9 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-9 % mRrjnkrkvksa }kjk Hkk"kkvksa dk i<+uk

Hkk"kk fy[kuk	vkofRr	ifr'kr
हिन्दी	189	82.2
अंग्रेजी	75	32.6
संस्कृत	15	6.5
उर्दू	12	5.2
अन्य	8	3.5

7-10 % lekpkj i= i<+uk

समाचार पत्र आधुनिक समाज में सूचना सम्प्रेषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। इसके द्वारा देश विदेश के राजनैतिक समाचार तथा अन्य सूचनाएं प्रकाशित की जाती है। इस साधन का प्रयोग यद्यपि शिक्षित व्यक्तियों तक ही सीमित था परन्तु भारतीय समाजों में होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने ग्रामीण समुदायों के सभी वर्गों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। समाचार पत्र न केवल व्यक्ति को एक विशेष प्रकार के तथ्य या सूचनाएं ही प्रदान करते हैं बल्कि ये व्यक्ति के दृष्टिकोण विचारों और व्यवहारों को निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। विचारों और व्यवहारों के नियन्त्रण में समाचार पत्र से बढ़कर अन्य कोई साधन आधुनिक समाज में महत्वपूर्ण नही हैं। समाचार पत्र वस्तुतः नगरीय शिक्षित सभ्यता का प्रतीक है। अतः इस साधन का ग्रामीण समुदायों में प्रसार, नगरीय सभ्यता के बढ़ते हुए प्रभाव का परिचायक है। साथ ही साथ यह साधन नगरीय जीवन शैली का प्रसार ग्रामीण समुदायों तक फैलाने में भी महत्वपूर्ण रूप से सहायक रहा है। समाचार पत्रों में अनेक प्रकार की वैचारिकी समीक्षाएं, वाणिज्य समाचार, विज्ञान, सरकारी तथा गैर सरकारी दृष्टिकोण के साथ–साथ अन्य बहुत प्रकार की जानकारियां होती हैं। जो व्यक्ति को सामाजिक तथ्यों का अन्तरीकरण करने और मनोवृत्तियों को दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती हैं। ग्रामीण भारत में समाज के पिछड़े एवं निम्न वर्गों के सन्दर्भ में समाचार पत्र ऐसे महत्वपूर्ण साधन हैं जो उन्हें सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के प्रति सचेत करते हैं और साथ ही उन्हे अपने हितों की सुरक्षा के लिए पारिस्थितियों का मूल्यांकन करके आवाज उठाने का उचित अवसर प्रदान करते हैं। इसलिए समाचार पत्र पढ़ने का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि क्या आप समाचार पत्र पढ़ते हैं। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 43.5 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ते हैं, 30.4 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ते हैं, तथा 26.1 प्रतिशत उत्तरदाता कभी समाचार पत्र नही पढ़ते हैं। अतः स्पष्ट है कि लगभग दो तिहाई से अधिक उत्तरदाता समाचार पत्र पढ़ते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.10 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-10 % mRrjnkrkvksa dk lekpkj i= i<uk

lekpkj&i= i<uk	*vko`fRr*	*izfr'kr*
नियमित	100	43.5
कभी–कभी	70	30.4
कभी नही	60	26.1
योग	230	100.0

7-10-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa lekpkj&i= i<uk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के समाचारपत्र पढ़ने पर सामाजिक परिवर्त्य का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.10.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में सम्मिलित युवा आयु समूह के उत्तरदाता 48.8 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 40.4 प्रतिशत तथा वृद्ध आयु समूह के 34.5 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से समाचारपत्र पढ़ते हैं। जो उत्तरदाता कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ते हैं, उनमें से 26.0 प्रतिशत उत्तरदाता युवा आयु समूह के, 25.0 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के तथा 45.5 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्ध आयु समूह के हैं। जो उत्तरदाता समाचार पत्र कभी नही पढ़ते उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 25.2 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 34.6 प्रतिशत तथा वृद्ध आयु समूह में 20.0 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि समाचार पत्र न पढ़ने वाले उत्तरदाताओं की संख्या मध्यम आयु समूह में और समाचार पत्र पढ़ने वाले उत्तरदाताओं की संख्या सबसे अधिक युवा आयु समूह में पायी गयी हैं। चूंकि शिक्षा और आयु समूह का वर्तमान अध्ययन में निकट सम्बन्ध प्रतीत होता है। अतः अधिक शिक्षित युवा आयु समूह में समाचार पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति अधिक पायी गई है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के उत्तरदाताओं में 63.0 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के उत्तरदाताओं में 55.9 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के उत्तरदाताओं में 48.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं में पायी गयी है। कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 33.0 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 44.0

प्रतिशत तथा स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 37.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं में पायी गयी है। जो उत्तरदाता कभी भी समाचार पत्र नही पढ़ते हैं वे या तो अशिक्षित हैं या प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 18.5 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि उच्च शैक्षणिक स्थिति वाले उत्तरदाता अपेक्षाकृत अन्य उत्तरदाताओं के समाचार पत्र पढ़ने में अधिक रूचि रखते हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ने वाले 54.8 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चजाति के, 48.8 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ीजाति के तथा 34.9 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचितजाति के उत्तरदाता हैं। जो उत्तरदाता कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ते हैं उनमें से 23.8 प्रतिशत उच्चजाति के, 29.3 प्रतिशत पिछड़ीजाति के तथा 33.9 प्रतिशत अनुसूचितजाति के उत्तरदाता हैं। जो उत्तरदाता कभी भी समाचार पत्र नही पढ़ते हैं उनमें 21.4 प्रतिशत उच्चजाति के, 21.9 प्रतिशत पिछड़ीजाति के तथा 31.2 प्रतिशत अनुसूचितजाति के उत्तरदाता पाये गये हैं। अतः स्पष्ट है कि समाचार पत्र पढ़ने की नियमित प्रवृत्ति उन्नति शैक्षणिक एवं आर्थिक स्थिति और नगरीय सम्पर्कता एवं जागरूकता को दर्शाती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.10.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

7-11 % lekpkj i= dk uke

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित जिन उत्तरदाताओं की प्रवृत्ति समाचार पत्र पढ़ने की है वे उत्तरदाता अधिकांश हिन्दी दैनिक समाचारपत्र पढ़ते हैं। अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति किसी भी उत्तरदाता में नही पायी गई। उत्तरदाताओं द्वारा हिन्दी दैनिक समाचार पत्र 41.7 प्रतिशत दैनिक जागरण, 19.6 प्रतिशत अमर उजाला, 6.5 प्रतिशत हिन्दुस्तान, 3.5 प्रतिशत आज, 2.6 प्रतिशत स्वतन्त्र भारत समाचार पत्रों को उत्तरदाताओं द्वारा पढ़ा जाता है तथा सभी समाचार पत्र कानपुर संस्करण के ही सर्वाधिक पढ़े जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं द्वारा दैनिक जागरण समाचार पत्र सर्वाधिक पढ़े जाने की प्रवृत्ति प्रतीत होती है। उपर्युक्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.11 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-10-1 % lkekftd ifjoR;l ,o lekpkj&i= i<uk

lkekftd ifjoR;l	fu;fer	dHkh&dHkh	dHkh ugh	;kx
vk;q				
20–35	60 48.8	32 26.0	31 25.2	123 100.0
36–50	21 40.4	13 25.0	18 34.6	52 100.0
51 से ऊपर	19 34.5	25 45.5	11 20.0	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	–	–	41 100.0	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	50 48.5	34 33.0	19 18.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	33 55.9	26 44.0	–	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	17 63.0	10 37.0	–	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	23 54.8	10 23.8	9 21.4	42 100.0
पिछड़ीजाति	40 48.8	24 29.3	18 21.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	37 34.9	36 33.9	33 31.2	106 100.0
योग	100 43.5	70 30.4	60 26.1	230 100.0

lkfj.kh % 7-11 lekpkj i= dk uke

lekpkj i=	*vkofRr*	*izfr'kr*
दैनिक जागरण	96	41.7
अमर उजाला	45	19.6
हिन्दुस्तान	15	6.5
स्वतन्त्र भारत	6	2.6
आज	8	3.5
हिन्दुस्तान टाइम्स	–	–
समाचार पत्र कभी नही पढ़ते	60	26.1
दैनिक भास्कर	–	–
योग	230	100.0

7-12 % lekpkj e: fp

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित जिन उत्तरदाताओं की प्रवृत्ति समाचार पत्र पढ़ने की है उन उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि वे किस प्रकार के समाचार पढ़ने में मुख्य रूप से रूचि रखते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 38.3 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक समाचार पढ़ने में, 6.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की रूचि अपराध सम्बन्धी समाचार (चोरी, हत्या, बलात्कार आदि) पढ़ने में, 17.4 प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण विकास सम्बन्धी समाचार में रूचि रखते हैं। 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता मनोरंजन सम्बन्धी समाचारों में रूचि रखते हैं, 4.3 प्रतिशत उत्तरदाता मुख्य रूप से रोजगार सम्बन्धी समाचार पत्र पढ़ते हैं। अतः स्पष्ट है कि राजनैतिक समाचार ही समाचार पत्र के पढ़ने में रूचि रखने वाले व्यक्तियों में विशेष रूप से प्रचलित है यह तथ्य समाचार पत्र पढ़ने वाले उत्तरदाताओं की राजनैतिक जागरूकता और प्रतिबद्धता का परिचायक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.12 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-12 % lekpkj e: fp

Lkekpkj	*vkofRr*	*izfr'kr*
राजनैतिक	88	38.3
अपराध सम्बन्धी	14	6.1
ग्रामीण विकास सम्बन्धी	40	17.4
मनोरंजन सम्बन्धी	18	7.8
रोजगार सम्बन्धी	10	4.3
समाचार पत्र कभी नही पढ़ते	60	26.1
योग	230	100.0

7-13 % jfM;k ¼VkfU tLVj F.M.½ lquu dh iofRr

रेडियो (ट्रान्जिस्टर) ने सूचना सम्प्रेषण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं। यह साधन न केवल शिक्षित व्यक्तियों को बल्कि अशिक्षित व्यक्यिों को विशेष रूप से प्रभावित करता है न केवल नगरीय क्षेत्रों में जहां बिजली की सुविधा ज्यादा समय के लिए उपलब्ध है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में जहां बिजली अल्प समय के लिए उपलब्ध है वहां रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) ने सूचनाओं के प्रसारण के कार्य को सम्भव बना दिया है। रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) द्वारा सूचना सम्प्रेषण का कार्य एक ही साथ विस्तृत भू–भाग में सरलतापूर्वक किया जा सकता है। रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.)द्वारा न केवल राजनैतिक समाचारों का बल्कि मनोरंजन कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है तथा अनेक प्रकार के प्रशिक्षण, विकासात्मक कार्यों की उपयोगिता, नवीन ज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाया जाता है। सूचना जन सम्पर्क विभाग द्वारा रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) के माध्यम से विकासकारी नवीन योजनाओं से लाभान्वित करने हेतु जन साधारण तक सूचनाएं प्रेषित की जाती हैं। रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) के माध्यम से तकनीकी कृषि के गुर कृषि वैज्ञानिक द्वारा कृषकों को सिखाए जाते हैं तथा रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) के माध्यम से अनेकों नवीन आधुनिक जानकारियां जन साधारण तक पहुंचाने के लिए प्रतिदिन कार्यक्रमों का प्रसारण होता है जैसे स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारियां, पशुधन सम्बन्धी जानकारी, ग्रामीण विकास, शि.क्षा, सहकारिता, व्यापार, पर्यटन, मनोरंजन देश विदेश की जानकारी तकनीकी कृषि इत्यादि। अतः रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) विकास और पुर्ननिर्माण की आधारशिला है। ग्रामीण समुदाय के सन्दर्भ में रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। यह साधन ग्रामीण व्यक्ति को नगरीय सभ्यता और नगरीय जीवनशैली की ओर अधिक निकट लाती है। इसके द्वारा वह गांव में रहते हुए भी नित्य नवीन विचारों से अवगत होता रहता है। अतः वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि क्या उनमें रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति है तथा वे रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) द्वारा प्रसारित नवीन विचारों और समस्त प्रविधियों से किस मात्रा में अवगत हो रहे हैं। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 41.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं में नियमित रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति है। 47.8 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति वाले हैं। केवल 10.5 प्रतिशत उत्तरदाता रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति नही रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति केवल थोड़े से उत्तरदाताओं को छोड़कर अधिकांश उत्तरदाताओं में पायी जाती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.13 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-13 jfM;k ¼VkfUtLVj F.M.½ luu dh iofRr

jfM;k luu dh iofRr	vkofRr	ifr'kr
नियमित	96	41.7
कभी–कभी	110	47.8
कभी नही	24	10.5
योग	230	100.0

7-13-1 % lkekftd ifjoR;l ,o jfM;k ¼VkfUtLVj F.M.½ luu dh iofRr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.13.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन में सम्मिलित युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं में रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति 44.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं में नियमित, 48.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं में कभी–कभी है। केवल 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता कभी रेडियो नही सुनते हैं। मध्यम आयु समूह के उत्तरदाताओं में रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति 42.3 प्रतिशत में नियमित, 50.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं में कभी–कभी, रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) ना सुनने वाले उत्तरदाता 7.7 प्रतिशत हैं। वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाताओं में रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति 34.6 प्रतिशत नियमित रूप से, 43.6 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रेडियो सुनने वाले हैं। केवल 21.8 प्रतिशत उत्तरदाता कभी भी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) नही सुनते हैं। अतः स्पष्ट है कि रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति युवा आयु के उत्तरदाताओं में तुलनात्मक रूप से अधिक है। यह स्थिति युवा आयु समूह के अधिक सामाजिक राजनीतिक जागरूकता की परिचायक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 36.6 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 39.8 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 44.1 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 51.9 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने में रूचि रखते हैं। जिन उत्तरदाताओं की रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने में रूचि कभी–कभी है उनमें से 53.7 प्रतिशत अशिक्षित समूह के 50.5 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के, 42.4 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के एवं 40.7 प्रतिशत स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के हैं। रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने में

रूचि न रखने वाले उत्तरदाताओं में 9.7 प्रतिशत अशिक्षित समूह के 9.7 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 13.5 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के एवं 7.4 प्रतिशत स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि शिक्षित उत्तरदाताओं की रूचि रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने में अपेक्षाकृत अधिक है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 47.6 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से और 45.2 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनते हैं तथा 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता कभी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) नही सुनते हैं। पिछड़ीजाति के 35.4 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से और 50.0 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनते हैं तथा 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता कभी रेडियों नही सुनते हैं। अनुसूचितजाति के 44.3 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से और 47.2 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनते हैं तथा 8.5 प्रतिशत उत्तरदाता कभी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) नही सुनते हैं। अतः स्पष्ट है कि नियमित रूप से रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने की प्रवृत्ति उच्चजाति में अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी है। इस जाति के सदस्य अपेक्षाकृत उन्नत, आर्थिक स्थिति के कारण अधिक मात्रा में रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) का स्वामित्व रखते हैं। ग्रामीण समुदायों में उदीयमान नवीन परिवर्तनों के फलस्वरूप अनुसूचितजातियों में भी परिवर्तन अत्याधिक प्रतीत होता है। उच्चजाति की तरह ही रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने में अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं की रूचि बढ़ रही है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.13.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

7-14 % jfM;ks ¼Vªkaft LVj F.M.½ lquus dk LFkku

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि किन स्थानों पर जाकर रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनते हैं ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 71.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास अपना रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) है। अतः वे लोग स्वयं अपने घर पर ही रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनते हैं। 8.3 प्रतिशत उत्तरदाता किसी के घर जाकर रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनते हैं, 9.5 प्रतिशत उत्तरदाता दुकानों पर जाकर रेडियों सुनते हैं तथा 10.5 प्रतिशत उत्तरदाता कहीं पर भी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) सुनने नही जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित आधे से अधिक उत्तरदाताओं के पास अपना निजी रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.14 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-13-1 % lkekftd ifjoR;l ,o jfM;k ¼VkfU tLVj F.M.½ luu dh iofRr

lkekftd ifjoR;l	fu;fer	dHkh&dHkh	dHkh ugh	;kx
vk;q				
20—35	55 44.7	60 48.8	8 6.5	123 100.0
36—50	22 42.3	26 50.0	4 7.7	52 100.0
51 से ऊपर	19 34.6	24 43.6	12 21.8	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	15 36.6	22 53.7	4 9.7	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	41 39.8	52 50.5	10 9.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	26 44.1	25 42.4	8 13.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	14 51.9	11 40.7	2 7.4	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	20 47.6	19 45.2	3 7.1	42 100.0
पिछड़ीजाति	29 35.4	41 50.0	12 14.6	82 100.0
अनुसूचितजाति	47 44.3	50 47.2	9 8.5	106 100.0
योग	96 41.7	110 47.8	24 10.5	230 100.0

lkfj.kh % 7-14 jfM;k lquus dk LFkkuA

LFkku	*vkofRr*	*ifr'kr*
अपना स्वयं का है	165	71.7
किसी के घर	19	8.3
दुकानों पर	22	9.5
कभी न सुनना	24	10.5
योग	230	100.0

7-15 % jfM;k d dk;Øe e :fp

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) पर किन कार्यक्रमों को सुनने में रूचि रखते हैं ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 70.9 प्रतिशत उत्तरदाता फिल्मी संगीत सुनने में रूचि रखते हैं, 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता नाटक सुनने में रूचि रखते हैं, 65.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि सम्बन्धी कार्यक्रमों को सुनने में रूचि रखते हैं, 47.8 प्रतिशत उत्तरदाता (देश व विदेश) समाचार को सुनने में रूचि रखते हैं, 12.2 प्रतिशत उत्तरदाता लोक गीत कार्यक्रमों को सुनने में रूचि रखते हैं, केवल 10.5 प्रतिशत उत्तरदाता रेडियों पर प्रसारित किसी भी कार्यक्रम को नही सुनते हैं। अतः स्पष्ट है कि रेडियो (ट्रान्जिस्टर F.M.) पर अधिकांश उत्तरदाता फिल्मी संगीत के कार्यक्रम व कृषि कार्यक्रमों को अत्याधिक रूचि से सुनते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.15 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-15 % jfM;k d dk;Øe e :fpA

:fpdj dk;Øe	*vkofRr*	*ifr'kr*
फिल्मी संगीत	163	70.9
नाटक	35	15.2
कृषि कार्यक्रम	150	65.2
समाचार	110	47.8
लोकगीत	28	12.2
कोई कार्यक्रम नही सुनते	24	10.5

7-16 % if=dk,a i<+us e :fp

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप पत्रिका पढ़ने में रूचि रखते हैं। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 34.3 प्रतिशत उत्तरदाता पत्रिका पढ़ने में रूचि रखते हैं। तथा 65.7 प्रतिशत उत्तरदाता पत्रिका पढ़ने में रूचि नही रखते है। पत्रिका पढ़ने में रूचि न रखने वालों में अशिक्षित उत्तरदाता भी सम्मिलित हैं। अतः स्पष्ट है कि एक

तिहाई उत्तरदाता पत्रिका पढ़ने में रूचि रखते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.16 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-16 % if=dk, i<u e :fpA

Ikf=dk, i<u e :fp	vkofRr	ifr'kr
हाँ	79	34.3
नही	151	65.7
योग	230	100.0

7-17 % Vyhfotu n[ku dh iofRr

टेलीविजन मनोरंजन तथा सूचना सम्प्रेषण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में आधुनिक समाज में निरन्तर प्रभावशाली स्थान प्राप्त करता जा रहा है। टेलीविजन मुख्यतः नगरीय मनोरंजन का साधन था परन्तु आधुनिक काल में सूचना एवं संचार के साधनों में जो प्रगति हुई है उसके परिणमस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र के निवासी भी इसकी ओर विशेष आकर्षित होते जा रहे हैं। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप टेलीविजन देखते हैं। उक्त तथ्यों से विदित होता हैकि 60.9 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से टेलीविजन देखते हैं, 23.9 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं। केवल 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं ये उत्तरदाता साधारणतः ऐसे व्यक्ति हैं जो आयु और परम्परावादी मनोवृत्ति के है। अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश उत्तरदाता टेलीविजन देखते हैं। यह इस कारण सम्भव हुआ है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तहत एक तरफ सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगति तथा इलेक्ट्रानिक उपकरणों (टेलीविजन, सी.डी. प्लेयर, डी.वी.डी. इत्यादि) की प्रचुरता बहुत ही कम मूल्यों पर प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध तथा केन्द्र तथा राज्य सरकार की महात्वाकांक्षी लक्ष्य सुदूर गांवों तक बिजली की व्यापक व्यवस्था करना है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.17 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-17 % Vyhfotu n[ku dh iofRrA

Vyhfotu	vkofRr	ifr'kr
नियमित	140	60.9
कभी–कभी	55	23.9
कभी नही	35	15.2
योग	230	100.0

7-17-1 % lkekftd ifjoR; ,o Vyhfotu n[ku dh iofRr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.17.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 70.7 प्रतिशत, उत्तरदाता टेलीविजन नियमित रूप से देखते हैं, 19.5 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं, केवल 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। मध्यम आयु समूह के 55.8 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से टेलीविजन देखते हैं, 28.8 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं तथा 15.4 प्रतिशत उत्तरदाता कभी भी टेलीविजन नही देखते हैं। वृद्ध आयु समूह के 43.6 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से 29.1 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं तथा 27.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन कभी नही देखते हैं। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं में टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति अत्याधिक स्पष्ट होती है। जबकि मध्यम व वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाताओं में भी क्रमशः टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति जाग्रत हो रही है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के उत्तरदाता 51.2 प्रतिशत नियमित तथा 31.7 प्रतिशत कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं केवल 17.1 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के उत्तरदाता 60.2 प्रतिशत नियमित रूप से तथा 22.3 प्रतिशत कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं व 17.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के उत्तरदाता 64.4 प्रतिशत नियमित रूप से तथा 18.7 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं केवल 16.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के उत्तरदाता 70.4 प्रतिशत नियमित रूप से तथा 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं। अतः स्पष्ट है कि उच्च शैक्षणिक स्तर के आधार पर सभी शिक्षा वर्गों में टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 57.1 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से 23.8 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं तथा 19.1 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। पिछड़ीजाति के 59.7 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से, 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं। तथा 15.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। अनुसूचितजाति के 63.2 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से तथा 23.6 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी टेलीविजन देखते हैं। केवल 13.2 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। अतः स्पष्ट है कि टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति अनुसूचितजाति के

उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत उच्चजाति व पिछड़ीजाति के अधिक प्रतीत होती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.17.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-17-1 % lkekftd ifjoR;l ,o Vyhfotu n[ku dh izofRrA

lkekftd ifjoR;l	fu;fer	dHkh&dHkh	dHkh ugh	;ksx
vk;q				
20–35	87 70.7	24 19.5	12 9.8	123 100.0
36–50	29 55.8	15 28.8	8 15.4	52 100.0
51 से ऊपर	24 43.6	16 29.1	15 27.3	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	21 51.2	13 31.7	7 17.1	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	62 60.2	23 22.3	18 17.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	38 64.4	11 18.7	10 16.9	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	19 70.4	8 29.6	——	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	24 57.1	10 23.8	8 19.1	42 100.0
पिछड़ीजाति	49 59.7	20 24.4	13 15.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	67 63.2	25 23.6	14 13.2	106 100.0
योग	140 60.9	55 23.9	35 15.2	230 100.0

7-18 % Vsyhfotu ij izlkfjr pSuyksa esa :fp

परिवर्तन के इस युग में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने अनेकों नये आयामों को जन्म दिया है। एक ओर वैज्ञानिक नित नई–नई खोज व अविष्कार कर के परिवर्तन के पथ को अग्रणी बना रहे हैं। वहीं दूसरी ओर प्रौद्योगिकी व इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में अनेको नये आयाम परिदर्शित होते हैं। अभी तक टेलीविजन के माध्यम से दूरदर्शन चैनल का ही प्रसारण होता था परन्तु आज अनेक नये चैनल (डिश टी0वी0) टेलीविजन के माध्यम से प्रसारित हो रहे हैं। प्रौद्योगिकी के इस युग में नगरीय व विशेषकर ग्रामीण जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आपकी किस चैनल को देखे में रूचि है उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के आधार पर 35.2 प्रतिशत उत्तरदाता दूरदर्शन चैनल देखने में विशेष रूचि रखते हैं तथा 49.6 प्रतिशत उत्तरदाता डिश टी.वी. चैनलों द्वारा प्रसारित चैनल को देखने में विशेष रूचि रखते हैं केवल 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन नही देखते हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता डिश टी.वी. द्वारा प्रसारित चैनलों को देखने में विशेष रूचि रखते हैं तथा दूरदर्शन चैनल को देखने में भी उत्तरदाताओं की रूचि प्रतीत होती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.18 में क्रमबद्ध किया गया है।

lkfj.kh % 7-18 % Vsyhfotu ij izlkfjr pSuyksa esa :fpA

:fpdj pSuy	vko`fRr	izfr'kr
दूरदर्शन	81	35.2
डिश टी.वी.	114	49.6
टेलीविजन नही देखते	35	15.2
योग	230	100.0

7-19 % flusek n'kZu

व्यक्ति के विचारों, मनोवृत्तियों, मूल्यों तथा उसके व्यवहार प्रतिमानों को प्रभावित करने वाले कारकों में सिनेमा का विशेष स्थान रहा है। सिनेमा एक ओर जहां समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याएं, नये मूल्यों, व्यवहार प्रतिमानों, जीवनशैली तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं से अवगत कराती है। वहीं दूसरी ओर लोगों को स्वस्थ मनोरंजन भी प्रदान करता है। यद्यपि सिनेमा विशेष रूप से नगरीय मनोरंजन की वस्तु है, परन्तु यातायात के साधनों के विस्तार के कारण तथा टेलीविजन पर फिल्मों के तथा विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रमों के एडर्वटाइज के कारण सिनेमा ग्रामीण समुदायों पर भी प्रभाव डाल रहा है। प्रायः सिनेमा में एतिहासिक एवं परम्परागत सामाजिक रीतिरिवाजों को नवीन ढ़ंग से मूल्यांकित करके चलचित्रों में प्रस्तुत किया जाता है, विशेषकर नयी आधुनिक तकनीकी तथा मनोवृत्तियों से देश में व विदेश में तैयार पाश्चात्य संस्कृति के अन्धे अनुकरण से युक्त फिल्मों का प्रसारण सर्वप्रथम सिनेमाघरों से ही किया जाता है। इस प्रकार नयी फिल्मों तथा आधुनिक पद्धति से तैयार वॉलीवुड फिल्म,

हॉलीवुड फिल्म इत्यादि कार्यक्रमों का समाज के पिछड़े एवं निम्न वर्गों की सामाजिक जागरूकता, महात्वाकांक्षाओं तथा वैचारिकी क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण साधन माना जा सकता है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप सिनेमा देखते हैं प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रायः सिनेमा देखने जाते हैं, 14.3 प्रतिशत उत्तरदाता नयी फिल्म लगने पर सिनेमा देखने जाते हैं, 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता दो–चार महीने में सिनेमा देखने जाते हैं, 28.3 प्रतिशत उत्तरदाता साल में एकाध बार सिनेमा देखने जाते हैं। केवल 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता सिनेमा नही देखते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण लोगों में सिनेमा के प्रति झुकाव कम प्रतीत होता है। फिल्म सिनेमाघरों की अपेक्षा टेलीविजन पर डी.वी.डी. प्लेयर के माध्यम से देखना ज्यादा पसन्द करते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.19 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-19 % fluek n'[kuk

fluek n'[kuk	*vko`fRr*	*izfr'kr*
सिनेमा	22	9.6
नयी फिल्म लगने पर	33	14.3
दो चार महीने पर	75	32.6
साल में एकाध बार	65	28.3
सिनेमा नही देखते	35	15.2
योग	230	100.0

7-20 % Hkze.k'khyrk dh izo`fRr

व्यक्ति की सामाजिक राजनैतिक जागरूकता का एक महत्वपूर्ण माध्यम उसकी भ्रमणशीलता की प्रवृत्ति है। व्यक्ति विभिन्न स्थानों पर जाकर नवीन जीवनशैली, नवीन विचारों और परिवर्तन के नवीन तरीकों से परिचित होता है। यह ज्ञान और अनुभव उसे अपनी जीवन परिस्थितियों के आंकलन और नवीन दिशाओं की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। अतः व्यक्ति के भ्रमण की परिधि और क्षेत्र का अध्ययन व्यक्ति के जागरूक होने के स्तर को जानने के लिए आवश्यक है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप प्रायः विवाह व्यवसाय या भ्रमण इत्यादि के सम्बन्ध में कहां तक घूमे फिरे हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 20.4 प्रतिशत उत्तरदाता केवल हरदोई नगर या हरदोई नगर के ग्रामीण क्षेत्रों में आये गये हैं। 63.5 प्रतिशत उत्तरदाता उत्तरप्रदेश के विभिन्न नगरों जैसे – लखनऊ, कानपुर, सीतापुर, शाहजहांपुर, कन्नौज, फर्रूखाबाद, लखीमपुर, आगरा, बरेली, गोण्डा, बहराइच, फैजाबाद इत्यादि स्थानों पर आये गये हैं। 16.1 प्रतिशत उत्तरदाता अपने प्रदेश के

अतिरिक्त देश के दूसरे प्रदेशों में भी आये गये हैं। (जैसे दिल्ली, लुधियाना, पंजाब, बिहार, बैंगलोर, हैदराबाद इत्यादि)। अतः स्पष्ट है कि वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाता भ्रमणशीलता की दृष्टि से अपने गृह जनपद से बाहर अनेक स्थानों पर भी जा–आ चुके हैं। उनके भ्रमण की परिधि अत्याधिक वृहद है। उत्तरप्रदेश के महत्वपूर्ण नगरों तथा प्रदेश से बाहर अन्य प्रान्तों में भी वे भ्रमण कर आये हैं। यह स्थिति उनके निवास क्षेत्र हरदोई नगर से निकटता का परिणाम है तथा उनके विस्तृत सामाजिक सम्बन्धों का परिचायक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.20 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-20 % Hkze.k'khyrk dh izo`fRr

Hkze.k LFkku	*vko`fRr*	*izfr'kr*
हरदोई नगर के आसपास	47	20.4
उत्तरप्रदेश के आसपास	146	63.5
विभिन्न राज्यों में	37	16.1
योग	230	100.0

7-20-1 % lkekftd ifjoR;ksa ,oa Hkze.k'khyrk dh izo`fRr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की भ्रमणशीलता की प्रवृत्ति पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 7.20.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 12.2 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के 23.1 प्रतिशत उत्तरदाता और वृद्ध आयु समूह के 36.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की स्थानीय गतिशीलता सीमित है। इन्होने केवल हरदोई नगर या हरदोई जनपद में निकटवर्ती क्षेत्रों का भ्रमण किया है। जिन उत्तरदाताओं ने उत्तरप्रदेश के विभिन्न नगरों व क्षेत्रों का भ्रमण किया है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 70.7 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 61.5 प्रतिशत और वृद्ध आयु समूह में 49.1 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं की भौगोलिक गतिशीलता अत्याधिक विस्तृत है। यह उत्तरदाता भ्रमण, विवाह या रोजगार की तलाश में अपने निवास स्थान के बाहर के अन्य स्थानों का भ्रमण कर आये हैं। इस प्रकार यह कहना उचित है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं का नगरीय सम्पर्क और विजातीय संस्कृति से सम्पर्क की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की विस्तृत स्थानीय गतिशीलता उनके उन्नत सामाजिक स्तर का परिचायक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि जिन उत्तरदाताओं ने केवल हरदोई नगर या हरदोई जनपद के निकटवर्ती क्षेत्रों का भ्रमण किया है उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 26.8 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 23.3 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 13.6 प्रतिशत तथा स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 14.8 प्रतिशत पायी गई है। जिन उत्तरदाताओं ने राज्य के अन्य महत्वपूर्ण नगरों का भ्रमण किया है उनकी मात्रा अशिक्षित समूह के उत्तरदाताओं में 61.0 प्रतिशत है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के उत्तरदाताओं में 63.1 प्रतिशत है, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 67.9 प्रतिशत है तथा स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 59.3 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त अन्य राज्यों का भ्रमण किया है उनमें से 12.2 प्रतिशत अशिक्षित समूह के, 13.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के, 18.6 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के और 25.9 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के हैं। अतः स्पष्ट है कि न केवल शिक्षित समूह के उत्तरदाता बल्कि अशिक्षित समूह के उत्तरदाता भी अपने निवास स्थान के बाहर के स्थानों का भ्रमण कर चुके हैं। यह तथ्य इन उत्तरदाताओं की विस्तृत सामाजिक परिधि और नगरीय सम्पर्क का परिचायक है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि जिन उत्तरदाताओं में केवल हरदोई नगर व हरदोई जनपद के निकटवर्ती क्षेत्रों का भ्रमण किया है उनकी मात्रा उच्चजाति में 23.8 प्रतिशत, पिछड़ी जाति में 17.1 प्रतिशत तथा अनुसूचितजाति में 21.7 प्रतिशत पायी गयी है। जो उत्तरदाता उत्तर प्रदेश राज्य के अन्य महत्वपूर्ण नगरों का भ्रमण किया है उनकी मात्रा उच्चजाति में 54.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 68.3 प्रतिशत तथा अनुसूचितजाति में 63.2 प्रतिशत है। जिन उत्तरदाताओं ने उत्तरप्रदेश के अतिरिक्त अन्य राज्यों का भ्रमण किया है उनकी मात्रा उच्चजाति में 21.4 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 14.6 प्रतिशत तथा अनुसूचितजाति में 15.1 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि न केवल उच्चजाति बल्कि पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता भी मूल निवास क्षेत्र से बाहर के भी अन्य स्थानों का भ्रमण कर चुके हैं। भ्रमण की परिधि का विस्तार उच्चजाति में अधिक पाया गया है। क्योंकि इस जाति के अनेक उत्तरदाता अपने प्रान्त के बाहर दूसरे प्रान्तों का भ्रमण कर आये हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.20.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-20-1 % lkekftd ifjoR;l ,o Hke.k'khyrk dh iofRr

lkekftd ifjoR;l	gjnkbl uxj o tuinh; {k=	mRrjin'k dk vU; uxj	fofHkUu jkT;ka e	;kx
vk;q				
20—35	15 12.2	87 70.7	21 17.1	123 100.0
36—50	12 23.1	32 61.5	8 15.4	52 100.0
51 से ऊपर	20 36.4	27 49.1	8 14.5	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	11 26.8	25 61.0	5 12.2	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	24 23.3	65 63.1	14 13.6	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	8 13.6	40 67.9	11 18.6	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	4 14.8	16 59.3	7 25.9	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	10 23.8	23 54.8	9 21.4	42 100.0
पिछड़ीजाति	14 17.1	56 68.3	12 14.6	82 100.0
अनुसूचितजाति	23 21.7	67 63.2	16 15.1	106 100.0
योग	47 20.4	146 63.5	37 16.1	230 100.0

7-21 % dEI;Vj dk Kku

आधुनिक युग तकनीकी का युग है। कम्प्यूटर एक ऐसा तकनीकी उपकरण है जो सीखने सिखाने के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला रहा है। सूचना सम्प्रेषण का आधार कम्प्यूटर ही है। कम्प्यूटर पर इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध होने से व्यक्ति अपनी आवश्यकता

के अनुसार विविध प्रकार की सामग्री (व्यापार सम्बन्धी जानकारी, शिक्षा सम्बन्धी जानकारी, स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी, रोजगार व आधुनिक नवीन तथ्यों को) प्राप्त कर सकता है। कम्प्यूटर अब ज्यादा से ज्यादा उन्नत हो रहा है तथा कम्प्यूटर अलग–अलग उद्देश्यों, जैसे – सूचना सम्प्रेषण, विज्ञापन, उद्योग, प्रकाशन, शिक्षण अधिगम, अनुसंधान, चिकित्सा इत्यादि के क्षेत्रों में विशेषकर प्रयोग में आ रहा है। देश के किसी भी कोने में एक कमरे के अन्तर बैठकर पर्यटन स्थलों, पुस्तकालयों, चिड़ियाघरों, संग्रहालयों व समस्त स्थलों को कम्प्यूटर के माध्यम से क्लिक करके देख सकते हैं। कम्प्यूटर के माध्यम से देश के एक कोने में बैठकर व्यक्ति दूसरे कोने में बैठे व्यक्ति से कम्प्यूटर पर आमने–सामने बात कर सकता है। आधुनिक संसार में यह सब कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के द्वारा सम्भव हुआ है। तकनीकी के इस युग में कम्प्यूटर ने मानव जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। जो अभी तक सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयों में समस्त कार्यों की लिखा पढ़ी हांथ से की जाती थी वहीं अब समस्त कार्यों का सम्पादन कम्प्यूटर के द्वारा किया जाता है। समस्त क्षेत्रों के कार्य व्यवहार कम्प्यूटरीकृत हो जाने से समाज का एक नया स्वरूप उभर के सामने आया है तथा मानव जीवन में गतिशीलता आयी है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप कम्प्यूटर साक्षर है प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 14.3 प्रतिशत उत्तरदाता कम्प्यूटर साक्षर हैं तथा 85.7 प्रतिशत उत्तरदाता कम्प्यूटर साक्षर नही हैं अतः स्पष्ट है कि एक चौथाई से भी कम उत्तरदाता कम्प्यूटर साक्षर है। परन्तु तकनीकी के इस युग में कम्प्यूटर के प्रयोग व साक्षरता की ओर ग्रामीण समुदायों के व्यक्तियों का आकर्षण बढ़ रहा है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.21 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-21 % dEI;wVj dk Kku

dEI;wVj Kku	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	33	14.3
नही	197	85.7
योग	230	100.0

7-22 % dEI;wVj i;ksx dk LFkku

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप कम्प्यूटर का प्रयोग किस स्थान पर करते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 4.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्वयं का पी.सी. है और वह अपने निवास स्थान पर ही कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं। 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता साइबर कैफे पर जाकर (जरूरत पड़ने पर) कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं, 0.9 प्रतिशत उत्तरदाता मित्र के घर (कभी–कभार) जाकर कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं तथा 1.3 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य स्थानों पर जाते हैं तब कम्प्यूटर का प्रयोग

करते हैं तथा 85.7 प्रतिशत उत्तरदाता कम्प्यूटर निरक्षर है। अतः स्पष्ट है ग्रामीण समुदाय के लोगों की कम्प्यूटर प्रयोग की ओर उन्मुखता बढ़ रही है जो परिवर्तन की द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.22 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-22 dEI;Vj i;ksx dk LFkku

Hke.k LFkku	vkofRr	ifr'kr
स्वयं का पी.सी. है	10	4.3
साइबर कैफे	18	7.8
मित्र के घर	2	0.9
अन्य स्थान	3	1.3
कम्प्यूटर निरक्षर	197	85.7
योग	230	100.0

<u>7-23 % dEI;Vj dh mi;ksfxrk</u>

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आपकी दृष्टि से कम्प्यूटर सबसे ज्यादा किस कार्य के लिए उपयोगी है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता सभी प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करने हेतु उपयोगी मानते हैं, 60.4 प्रतिशत उत्तदाता मनोरंजन के लिए उपयोगी मानते हैं, 71.7 प्रतिशत उत्तरदाता खेल के लिए उपयोगी समझते हैं, 95.7 प्रतिशत उत्तरदाता अध्ययन व शैक्षणिक कार्यों के लिए उपयोगी मानते हैं, 93.5 प्रतिशत उत्तरदाता सभी विभागीय कार्यों के सम्पादन के लिए उपयोगी मानते हैं, 56.5 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य कार्यों के लिए उपयोगी मानते हैं। अतः अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश उत्तरदाताओं में कम्प्यूटर निरक्षरता होने के उपरान्त भी कम्प्यूटर की उपयोगिता के तथ्यों से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी कम्प्यूटर की उपयोगिता को भली भांति समझते हैं ग्रामीण लोग कम्प्यूटर को सबसे अधिक उपयोगी अध्ययन एवं शैक्षणिक कार्यों के सम्पादन के लिए आवश्यक समझते हैं। यह तथ्य ग्रामीण मनोवृत्तियों में नवीन परिवर्तन का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.23 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-23 % dEI;Vj dh mi;ksfxrkA

mi;ksfxrk	vkofRr	ifr'kr
सभी प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करने हेतु	210	91.3
मनोरंजन के लिए	139	60.4
खेल के लिए	165	71.7
अध्ययन एवं शैक्षणिक कार्यों के लिए	220	95.7
सभी विभागीय कार्यों के सम्पादन में	215	93.5
अन्य कार्यों के लिए	130	56.5

7-24 % bUVjuV dk i;ksx

इन्टरनेट एक अत्याधुनिक संचार प्रौद्योगिकी है जिसमें करोड़ों कम्प्यूटर एक नेटवर्क से जुड़े हुए होते हैं। इन्टरनेट को मोटे तौर पर कम्प्यूटरों के विश्वव्यापी नेटवर्क के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक प्रोटोकाल (सूचना के आदान–प्रदान सम्बन्धी नियम) के जरिए संचार करते हैं। इन्टरनेट का वर्णन करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे किसी नगर का वर्णन करना। नगर का मानचित्र उसके लोग, बाजार, गलियां, घर, लोग, ग्रामीण क्षेत्र, गांव, सरकार, मैदान, मौसम आदि या इनका समग्र रूप। इन्टरनेट भी एक ऐसा ही स्थान है। इन्टरनेट कोई साफ्टवेयर नही है न यह काई प्रोग्राम है न कोई हार्डवेयर है वास्तव में यह तो एक ऐसा स्थान है जहां हमें अनेक प्रकार की शैक्षिक जानकारियां व सूचनाएं प्राप्त होती हैं। इन्टरनेट के माध्यम से सूचनाओं तक पहुंचा जाता है। जिसमें व्यक्तियों और विश्व भर के संगठनों का योगदान होता है। उन्हे नेटवर्क ऑफ सर्वर्स (सेवकों का नेटवर्क) कहा जाता है। इन्टरनेट बड़ी मात्रा में आंकड़ों की खोज करने में सहायक होता है। इन्टरनेट से एक स्थान से अनेकों स्थानों तक प्रसारण संचार की अपेक्षा बिन्दु से बिन्दु तक संचलित होता है। इन्टरनेट के द्वारा अनेक मल्टीमीडिया सम्बन्धी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। जैसे – वीडियो कान्फ्रेन्सिंग, डाक्यूमेण्ट रिट्रीवल आदि। संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण सामाजिक नोट्स के आदान प्रदान में यह सहायता देता है। विश्व की नवीनतम खबरे प्राप्त करने में यह सहायक है। आवश्यकतानुसार कम्प्यूटर फाइल्स का स्थानान्तरण करने में सहायता करता है व्यापारिक समझौते (वार्ता) करने में इन्टरनेट अहम भूमिका निभाता है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता स्वयं के कम्प्यूटर पर नियमित रूप से इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं, 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता साइबर कैफे पर जाकर जरूरत पड़ने पर इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं, 80.0 प्रतिशत उत्तरदाता सहज जन सेवा केन्द्रों पर जाकर जरूरत पड़ने पर इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं। 90.4 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी या गैर सरकारी दफ्तरों बैंकों में जाकर जरूरत पड़ने पर कम्प्यूटर के माध्यम से इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता इन्टरनेट का प्रयोग सहज जन सेवा केन्द्रों पर विभिन्न प्रकार के प्रमाण पत्रों की प्राप्ति के लिए बैंक खाता खुलवाने व अन्य कार्यों के सम्पादन के लिए करते हैं। इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि ग्रामीण लोग बहुत ही तीव्र गति से तकनीकी व कम्प्यूटर से जुड़ रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.24 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-24 % bUVjusV dk i;ksx

bUVjusV dk i;ksx	*fu;fer*		*t:jr iMus ij*	
	vkofRr	*izfr'kr*	*vkofRr*	*izfr'kr*
स्वयं के पी0सी0 पर	4	1.7	—	—
साइबर कैफे में	— —	——	25	10.9
सहज जन सेवा केन्द्रों पर	— —	——	184	80.0
सरकारी/गैर सरकारी दफ्तरों में	— —	——	208	90.4

7-25 % ekckby Qksu

तकनीकी के इस युग में जहां यातायात के साधन तो केवल दूरी पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं। वहां संचार माध्यम समय और दूरी दोनों पर ही विजय पाने में समर्थ हैं। संचार शब्द का अर्थ हैं जब एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति तक विचारों एवं सूचनाओं का प्रसार होता है जब एक व्यक्ति अपने मोबाइल फोन से दूसरे व्यक्ति के मोबाइल फोन पर बात करता है तो यह प्रक्रिया संचार की प्रक्रिया कहलाती है। मोबाइल फोन आधुनिक संचार साधनों से सर्वाधिक एवं प्रभावशाली है। आज लगभग प्रत्येक व्यक्ति के पास मोबाइल फोन उपलब्ध है। व्यक्ति किसी भी समय किसी भी स्थान से मोबाइल फोन से देश–विदेश में बसे हुए अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, नातेदारों, सरकारी नौकरशाह व अन्य व्यक्तियों से वार्ता कर सूचनाएं प्राप्त कर सकता है। मोबाइल क्रान्ति ने सूचना और सम्पर्क को बहुत ही आसान बना दिया है। विभिन्न व्यापारिक संगठन अथवा एक सामान्य व्यापारी, रिक्शा चालक से लेकर ठेले ठेलिया, साइकिल पर सब्जी या अन्य खाद्य सामग्री बेचने वाला इत्यादि भी मोबाइल फोन से बाजार का भाव, बड़ी बड़ी डील कर लेता है। मोबाइल फोन के द्वारा ही एक सामान्य व्यापारी वस्तुओं का क्रय विक्रय भी कर लेता है। सरल शब्दों में यह कहना उचित होगा कि संचार क्रान्ति (मोबाइल क्रान्ति) ने व्यापार, मनोरंजन एवं जनमानस को विशेषकर प्रभावित किया है। भारतीय संस्कृति, मनोरंजन, शिक्षा, सूचना–प्रसारण, धर्म, व्यापार, उद्योग, राजनीति एवं ग्रामीण व नगरीय व्यक्तियों की मनोवृत्तियों को मोबाइल फोन ने विशेषकर प्रभावित किया है। आज हमारे रीति रिवाजों परम्पराओं प्रथाओं में नवीन परिवर्तन देखने को मिल रहा है जो कि मोबाइल फोन के प्रचलन का परिणाम है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं, 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग नही करते हैं। अतः स्पष्ट है कि लगभग सभी उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं। इन तथ्यों से यह प्रतीत होता है कि (मोबाइल फोन) संचार क्रान्ति ने ग्रामीण लोगों की मनोवृत्तियों में, जीवन पद्धतियों में व्यापार में तथा समस्त कार्यों में उदीयमान नवीन परिवर्तन उत्पन्न किया है

जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.25 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-25 % ekckby Qku dk i;kxA

ekckby Qku dk i;kx	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	210	91.3
नही	20	8.7
योग	230	100.0

7-26 % ekckby Qku dh mi;kfxrk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप के अनुसार मोबाइल फोन आप के लिए कितना उपयोगी है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 58.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मोबाइल फोन उनके लिए बहुत ज्यादा उपयोगी है, 20.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मोबाइल फोन उनके लिए बहुत उपयोगी है, 12.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मोबाइल फोन उनके लिए थोड़ा बहुत उपयोगी है तथा 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाइल फोन का उपयोग नही करते हैं। अतः स्पष्ट है कि दो तिहाई उत्तरदाता मोबाइल फोन को बहुत ज्यादा उपयोगी समझते हैं तथा मोबाइल फोन के बिना वह अपने कार्यों को पूर्ण करने में अपने आप को असमर्थ समझते हैं। स्पष्टतः नवीन तकनीकी पर उत्तरदातओं की पूर्णतया परनिर्भरता प्रदर्शित हो रही है जो कि आधुनिक जीवन पद्धति के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.26 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-26 % ekckby Qku dh mi;kfxrkA

ekckby Qku dh mi;kfxrk	*vkofRr*	*ifr'kr*
बहुत ज्यादा	135	58.7
ज्यादा	47	20.4
थोड़ा बहुत	28	12.2
उपयोग नही करते हैं	20	8.7
योग	230	100.0

7-27 % ekckby Qku dk 0;fDr vkj lekt ij iHkko

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर किस प्रकार का प्रभाव देखने को मिल रहा है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 30.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है, 10.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है, 51.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर सकारात्मक और

नकारात्मक दोनो प्रभाव देखने को मिल रहे हैं। केवल 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन मे सम्मिलित उत्तरदाताओं में से आधे उत्तरदाता सकारात्मक और नकारात्मक दोनो प्रकार के प्रभाव के पक्षधर हैं। यह मत समाज में नवीन परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 7.27 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 7-27 % ekckby Qksu dk 0;fDr vkj lekt ij izHkkoA

ekckby Qksu dk izHkko	*vkof`Rr*	*izfr'kr*
सकारात्मक प्रभाव	71	30.9
नकारात्मक प्रभाव	25	10.9
सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो	119	51.7
कह नही सकते	15	6.5
योग	230	100.0

lkjka'k

वर्तमान अध्ययन में ग्रामीण राजनैतिक जीवन व संचार सम्प्रेषण की सामान्य विशेषताओं और उनमें होने वाले परिवर्तनों की विवेचना की गयी है। प्रथम खण्ड में राजनैतिक सहभागिता के प्रतिमानों के पारस्परिक सम्बन्धों की अन्तः क्रिया की विवेचना की गयी है तथा द्वितीय खण्ड में सूचना सम्प्रेषण के साधन ग्रामीण समुदाय को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं।

आधुनिक काल में ग्रामीण समुदाय को जिन परिवर्तन की नवीन शक्तियों ने प्रभावित किया है उनमें से एक प्रमुख शक्ति नवीन राजनैतिक संस्थाएं और मूल्य है। ग्रामीण समुदाय में बढ़ती हुई शिक्षा, उद्योगधन्धों का विभेदीकरण बढ़ती हुई नगरीय सम्पर्कता इत्यादि के सम्बन्ध में इन नवीन राजनैतिक संस्थाओं और मूल्यों ने ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की राजनैतिक जागरूकता और सहभागिता को प्रभावित किया है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता (65.2 प्रतिशत) लोकतन्त्रात्मक, राजनैतिक विचारधारा के स्वामी हैं जिसमें युवा आयु समूह के (71.6 प्रतिशत) तथा शिक्षा के बढ़ते क्रम में स्नातक/स्नातकोत्तर (100.0 प्रतिशत) शिक्षित उच्चजाति के (80.9 प्रतिशत) उत्तरदाता इस विचारधारा के विशेष समर्थक हैं तथा राजनैतिक दलों की सदस्यता में सर्वाधिक (40.4 प्रतिशत) समाजवादी पार्टी, (34.4 प्रतिशत) भारतीय जनता पार्टी के प्रति सहानुभूति रखते हैं। यह तथ्य प्रदर्शित करता हैं कि आधुनिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप परम्परागत पुरानी प्रणाली के तहत कार्यशैली वाली पार्टियों को पीछे छोड़ अब उच्च जातीय युवा शिक्षित उत्तरदाता नवीन तकनीकी के तहत कार्यशैली पर

कार्य करने वाली पार्टियों में अत्याधिक सहानुभूति रखते हैं जो आधुनिक परिवर्तन का द्योतक है तथा 70.0 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दलों की प्रत्येक रैली में सहभागिता करते हैं जिसमें सर्वाधिक युवा आयु समूह के 75.6 प्रतिशत सामान्य शिक्षित व अशिक्षित प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त समूह के 77.7 प्रतिशत तथा विशेषतः अनुसूचितजाति के 72.6 प्रतिशत उत्तरदाता सम्मिलित हैं। राजनैतिक दलों की रैली में सहभागिता की यह प्रतिशतता यह दर्शाती है कि ग्रामीण समुदाय के लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन के फलस्वरूप ग्रामीण लोग रैलियों में जाकर यह सोंचते हैं कि कौन पार्टी सर्वाधिक विकास करेगी उसी के पक्ष में मतदान करते हैं। यह मनोवृत्ति आधुनिकता को दर्शाती है। अब ग्रामीण लोगों की जागरूकता के फलस्वरूप (65.2 प्रतिशत) आधे से अधिक मतदाता चुनाव में सहभागिता करते हैं, मतदान करने जाते हैं। जिसमें सर्वाधिक युवा आयु समूह के (71.5 प्रतिशत) शिक्षा के बढ़ते क्रम में अधिक शिक्षित व्यक्ति स्नातक/स्नातकोत्तर (70.4 प्रतिशत) तथा अनुसूचितजाति के (68.9 प्रतिशत) उत्तरदाता सम्मिलित हैं तथा उत्तरदाता स्वयं बनने या सन्तान को जनप्रतिनिधि बनाने के प्रति (65.7 प्रतिशत) जिज्ञासावान हैं जिसमें युवा आयु समूह के (70.7 प्रतिशत) शिक्षा के बढ़ते क्रम में अधिक शिक्षित व्यक्ति स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त (81.5 प्रतिशत) अनुसूचित जातीय उत्तरदाता सम्मिलित है। जनप्रतिनिधित्व करने की या अपनी सन्तान को बनाने की यह जिज्ञासा आधुनिकीकरण द्वारा उत्पन्न नवीन मनोवृत्तियों का द्योतक है तथा वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों के प्रति (65.2 प्रतिशत) आधे से अधिक उत्तरदाताओं का सकारात्मक दृष्टिकोण है जिसमें अत्याधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले संतुष्ट उत्तरदाता अनुसूचितजाति के तथा कम शिक्षित या अशिक्षित युवा आयु समूह के उत्तरदाता सम्मिलित हैं।

द्वितीय खण्ड में ग्रामीण सामाजिक संरचना में सूचना सम्प्रेषण का प्रभाव के नवीन प्रतिमानों से सम्बन्धित तथ्यों की विवेचना की गई है। अध्ययन से यह विदित होता है कि आधुनिक भारत के ग्रामीण समुदायों में राजनीतिकरण, ग्रामवासियों में जनतन्त्रीकरण और राजनैतिक सहभागिता के उद्बोधन में सूचना–संचार के साधनों का महत्वपूर्ण योगदान है, यह जनसमुदाय की जागरूकता चेतना तथा सामान्य शिक्षा के प्रमुख आधार है। अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाता हिन्दी बोल लेते हैं तथा 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता अंग्रेजी भी बोल लेते हैं तथा पढ़ने व लिखने वालों की संख्या क्रमशः हिन्दी 82.2 प्रतिशत, अंग्रेजी 32.6 प्रतिशत है तथा कुछ उत्तरदाता संस्कृत व उर्दू का भी प्रयोग करते हैं। समाचार पत्र पढ़ने की नियमित प्रवृत्ति 43.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं में विद्यमान है जो कि सर्वाधिक नियमित समाचारपत्र पढ़ने की प्रवृत्ति क्रमशः युवा आयु समूह के शिक्षा के बढ़ते क्रम में अधिक शिक्षित व्यक्ति स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त (63.0 प्रतिशत) उच्चजाति के उत्तरदाता हैं। समाचारपत्र पढ़ने में उत्तरदाताओं की यह संलग्नता नवीन परिवर्तन की परम्परा को दर्शाती है। यह सभी उत्तरदाता सर्वाधिक दैनिक जागरण समाचारपत्र, अमर उजाला हिन्दी दैनिक

समाचारपत्र पढ़ने में सर्वाधिक रूचि रखते हैं तथा समाचारपत्रों में सर्वाधिक राजनीति से सम्बन्धी (38.3 प्रतिशत) खबर तथा ग्रामीण विकास सम्बन्धित (17.4 प्रतिशत) खबर या समाचार पढ़ते हैं। सामान्य तौर पर अपराध सम्बन्धी, मनोरंजन सम्बन्धी समाचारों व खबरों को भी पढ़ते हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों में रेडियो (F.M.) सुनने की नियमित (41.7 प्रतिशत) प्रवृत्ति है जोकि युवा आयु समूह के अधिक शिक्षित व उच्चजाति के उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अधिक रूचि प्रतीत होती है। अधिकांश लोग अपने घर पर ही रेडियो (F.M.) सुनते हैं यद्यपि अधिकतर उत्तरदाता फिल्मी संगीत व कृषि कार्यक्रमों को सुनने में विशेष रूचि रखते हैं तथापि अनेक उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो समाचार व लोकगीत सुनने में रूचि रखते हैं। पत्रिकाएं पढ़ने वालों में (34.3 प्रतिशत) बहुत कम उत्तरदाताओं की रूचि प्रतीत होती है तथापि टेलीविजन देखने में नियमित तौर पर (60.9 प्रतिशत) आधे से ज्यादा उत्तरदाता टेलीविजन देखते हैं जिसमें सर्वाधिक टेलीविजन देखने में रूचि रखने वाले युवा आयु समूह के (70.7 प्रतिशत) तथा शिक्षा के बढ़ते क्रम में अधिक शिक्षित, स्नातक/स्नातकोत्तर (70.4 प्रतिशत) शिक्षा प्राप्त अनुसूचितजाति, पिछड़ीजाति व उच्चजाति के उत्तरदाता सम्मिलित हैं तथा टेलीविजन पर प्रसारित चैनलों को देखने में (49.6 प्रतिशत) डिश.टी.वी. व दूरदर्शन को (35.2 प्रतिशत) देखने में अधिक रूचि रखते हैं। सिनेमा देखने की प्रवृत्ति अधिकतर उत्तरदाताओं में पायी गयी है तथा ये क्रमशः दो–चार महीनों में, नयी फिल्म लगने पर देखते हैं। ग्रामीण लोगों में भ्रमणशीलता की प्रवृत्ति (63.5 प्रतिशत) उत्तरप्रदेश के अन्य नगरों में (20.4 प्रतिशत) हरदोई नगर के आस–पास विशेष रूप से प्रकट होती है जिसमें सर्वाधिक भ्रमण करने वाले वृद्ध आयु समूह के कम शिक्षित व अशिक्षित उच्च व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता हैं। उत्तरदाताओं में भ्रमणशीलता की यह विशेष प्रवृत्ति आधुनिक तकनीकी से युक्त नवीन उदीयमान यातायात के साधनों के उद्भव का परिणाम है जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाता है। आधुनिक तकनीकीकरण के इस युग में तकनीकी का मुख्य रूप ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिखाई देने लगा है। इस युग में ग्रामीण लोग भी कम्प्यूटर के ज्ञान से अछूते नही रह गए हैं तथा अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में से (14.3 प्रतिशत) कुछ उत्तरदाता कम्प्यूटर का ज्ञान रखते हैं तथा 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता मित्रों के घर पर जाकर कम्प्यूटर का प्रयोग करते हैं तथा 4.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्वयं का पी.सी. है। तथापि कम्प्यूटर सभी प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करने का उपकरण है। 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता कम्प्यूटर को विशेष उपयोगी समझते हैं तथा उत्तरदाता सहज जनसेवा केन्द्रों पर (80.0 प्रतिशत) जाकर इन्टरनेट का प्रयोग भी करते हैं व सरकारी कार्यों के सम्पादन में कम्प्यूटर सर्वाधिक उपयोगी साधन है। तकनीकी के इस युग में जहां यातायात के साधन तो केवल दूरी पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं वहीं दूसरी ओर संचार माध्यम ने समय और दूरी दोनो पर विजय पाने में समर्थ हैं। अब ग्रामीण जीवन में मोबाइल फोन दैनिक जीवन का विशेष अंग बन गया है। ग्रामीण लोग (91.3 प्रतिशत) सर्वाधिक मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं जिसने ग्रामीण लोगों की

मनोवृत्तियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं। 58.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए मोबाइल फोन बहुत ज्यादा उपयोगी है तथा 20.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए ज्यादा उपयोगी व 12.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए थोड़ा बहुत उपयोगी है। उपयोगिता की मूलदृष्टि से मोबाइल फोन ने ग्रामीण लोगों के जीवन के आर्थिक पक्ष पारिवारिक पक्ष, व्यापारिक पक्ष, शैक्षणिक पक्ष व मनोवृत्तियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन का संचयन किया है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाता है तथा उत्तरदाताओं के मतानुसार (30.9 प्रतिशत) एक तिहाई से ज्यादा उत्तरदाता यह मानते हैं कि मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर सकारात्मक प्रभाव है। वहीं आधे उत्तरदाताओं का मत है कि मोबाइल का व्यक्ति और समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव देखने को मिलता है। उपर्युक्त दर्शित तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि ग्रामीण समुदाय के व्यक्तियों पर कम्प्यूटर, इन्टरनेट मोबाइल इत्यादि का विशेष प्रभाव दिखाई देता है जिसके कारण ग्रामीण लोगों के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन तीव्रगति से हो रहे हैं जोकि आधुनिक परिवर्तनों का द्योतक है।